लोक कथाओं में शाप–1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Shaap-1 (Curse in Folktales-1)
Cover Page picture : Cursing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
लोक कथाओं में शाप–1 7
1 पोम और पील 9
2 सोने के तीन पहाड़ों की रानी 23
3 चोर फाख्ता 34
4 एक छोटा चरवाहा 44
5 सेब वाली लड़की 55
6 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था 62
7 एक राजकुमार जिसने मेंढकी से शादी की 70
8 तीन कुत्ते 79
9 सॉप बादशाह 94
10 पिपीना सॉप 111
11 लम्बी पूँछ वाला चूहा 131
12 केंकड़ा राजकुमार 141

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में शाप–1

वरदान देना या इच्छाऐं पूरी करना, शाप देना या जादू डालना लगभग सभी समाजों के जीवन का एक मुख्य अंग है। कहीं लोग किसी भी चीज़ से खुश हो जाते हैं तो उसको वर दे देते हैं या उसकी कोई इच्छा पूरी कर देते हैं और अगर नाराज़ हो जाते हैं तो उसको शाप दे देते है या फिर उसके ऊपर जादू डाल देते हैं।

इससे पहले हमने दो पुस्तकें प्रकाशित की थीं – "इच्छाऐं इच्छाऐं इच्छाऐं" और "वरदानों का कमाल"[1] जिनमें से पहली पुस्तक में कुछ ऐसी लोक कथाऐं थीं जिनमें लोगों की इच्छाऐं पूरी की गयी थीं। वह बात अलग है कि उन्होंने फिर अपनी उन इच्छाओं को किस तरह इस्तेमाल किया। दूसरी पुस्तक में हमने दुनियॉ के देशों की कुछ ऐसी लोक कथाऐं दी थीं जिसमें वरदानों का कमाल दिखाया गया था। ये दोनों पुस्तकें तुम लोगों ने बहुत पसन्द कीं।

अब तुम्हारे हाथों में है यह पुस्तक जिसमें शापों या जादू डालने वालों ने हलचल मचायी हुई है। क्योंकि शाप देना और जादू डालना दोनों करीब करीब एक सी ही बात है इसलिये इन शाप वाली लोक कथाओं में जादू डालने वाली लोक कथाओं को भी शामिल कर लिया गया है। उन सबको जिन पर यह शाप या जादू डाला गया उस शाप या जादू की वजह से उन्हें कितनी मुश्किलें उठानी पड़ीं और फिर वे सब उन शापों से कैसे आजाद हुए यही इस पुस्तक की लोक कथाओं का विषय है।

इस विषय की भी तीन पुस्तकें पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं – "लोक कथाओं में शाप–**1**" "लोक कथाओं में शाप–**2**" और "लोक कथाओं में शाप–**3**"। इसकी पहली पुस्तक में यूरोप के इटली देश की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं। इसकी दूसरी पुस्तक में यूरोप के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं। और इसकी तीसरी पुस्तक में दुनियॉ के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं।

इन सब पुस्तकों में हम दुनियॉ की कुछ ऐसी लोक कथाऐं की प्रकाशित कर रहे हैं जिनमें लोगों ने दूसरों को जानवर बन जाने के शाप दिये हैं या फिर उनके ऊपर जानवर बन जाने का जादू डाल दिया है या फिर किसी और प्रकार का शाप दिया है। फिर दूसरे लोगों ने उनको उन शापों या जादुओं से उनको कैसे आजाद कराया है।

इसी तरह की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी "सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियॉ"[2]। सामान्य रूप से वे सब कहानियॉ भी शाप या जादू डालने जैसी ही हैं पर वे सब कहानियॉ इस पुस्तक में शामिल नहीं की गयी हैं क्योंकि उन सबमें सामान्यतया सब लड़कियॉ ही हैं और शाप या जादू के असर से वे सब केवल सो जाती हैं उनका रूप नहीं बदला जाता। फिर कोई राजकुमार या कोई आदमी आता है और उनको उठाता है इसलिये वे सब एक साथ एक ही पुस्तक में दी गयी हैं। पर इन कथाओं में सामान्यतया सब आदमी ही हैं। और अगर कोई लड़की है भी तो वह शाप की वजह से सोयी नहीं है बल्कि उसका रूप ही बदल गया है।

आओ तो लो पढ़ो शाप और जादू की ये बहुत सारी लोक कथाऐं – कुछ सुनी कुछ अनसुनी कुछ कही और कुछ अनकही। आशा है कि हमारे लोक कथाओं के दूसरे सग्रंहों की तरह तुम्हें यह संग्रह भी पसन्द आयेगा।

---

[1] "Ichchhayen Ichchayen Ichchayen", by Sushma Gupta in Hindi language
"Varadanon Ka Kamal", by Sushma Gupta in Hindi language

[2] "Sotee Huee Sundaree Jaisee Kahaniyan", by Sushma Gupta in Hindi language

1 पोम और पील[3]

यूरोप महाद्वीप के इटली देश की इस लोक कथा में एक जादूगर पिता अपनी बेटी को ही शाप देता है पर उसके पति का दोस्त उसको उसके पिता के शापों से बचा लेता है पर वह खुद पत्थर का बन जाता है। यह देख कर वह पिता उस दोस्त को ज़िन्दा कर देता है।

एक बार की बात है कि किसी समय में एक बहुत ही भले पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था सो उनको एक बेटे की बहुत इच्छा थी।

एक दिन पति कहीं बाहर गया हुआ था कि रास्ते में उसको एक जादूगर मिला। उसने उस जादूगर से कहा — "जादूगर साहब, मुझे एक बेटा चाहिये। मैं एक बेटा पाने के लिये क्या करूँ?"

जादूगर ने उसको एक सेब दिया और कहा — "लो यह सेब लो और इसको अपनी पत्नी को खिला देना और नौ महीने बाद उसको एक बहुत ही अच्छा बेटा हो जायेगा।"

पति उस सेब को ले कर घर वापस आ गया। वह सेब उसने अपनी पत्नी को दे कर कहा — "लो यह सेब खा लो। यह सेब

[3] Pom and Peel – a folktale from Venice, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980. A part translation of this book is available in Hindi in seven parts from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

मुझे एक जादूगर ने दिया है और कहा है कि इसको खा कर तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा।"

उसकी पत्नी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी। उसने तुरन्त अपनी दासी को बुलाया और उस सेब को छील कर लाने के लिये कहा।

दासी वह सेब छील कर ले आयी। छिला हुआ सेब तो उसने अपनी मालकिन को दे दिया पर उसके छिलके उसने अपने पास रख लिये और उनको उसने खुद खा लिया।

पत्नी को नौ महीने बाद एक बेटा हुआ और उसी दिन उस दासी को भी एक बेटा हुआ। पत्नी का बेटा सफेद रंग का था जैसा कि सेब के गूदे का रंग होता है और दासी का बेटा लाल रंग का था जैसा कि सेब के छिलके का रंग होता है।

पत्नी के बेटे का नाम था पोम और दासी के बेटे का नाम था पील। दोनों बच्चे बड़े होते गये। दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और भाइयों की तरह से रहते थे।

एक बार वे दोनों बाहर घूम रहे थे तो उन्होंने सुना कि एक जादूगर की बेटी है जो सूरज की तरह चमकीली है पर किसी ने उसको देखा नहीं था क्योंकि वह अपने घर से कभी बाहर ही नहीं निकलती थी। यहॉ तक कि वह कभी खिड़की से भी नहीं झॉकती थी।

पोम और पील के पास एक तॉबे का घोड़ा था जो अन्दर से खोखला था। एक दिन वे दोनों उसमें वायलिन और बिगुल ले कर बैठ गये और क्योंकि वे उस घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमा कर चला सकते थे सो वे उस घोड़े में बैठ कर अपनी वायलिन और बिगुल बजाते हुए उस घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमाते हुए चला कर जादूगर के महल की तरफ चल दिये।

जब वे जादूगर के महल के पास पहुॅचे तो जादूगर ने बाहर देखा तो उसको एक बहुत ही बढ़िया तॉबे का घोड़ा दिखायी दिया जिसमें से संगीत निकल रहा था।

वह उस घोड़े को अन्दर ले आया और उस आश्चर्यजनक चीज़ दिखाने के लिये अपनी बेटी को अन्दर से बाहर बुलाया। उस संगीत वाले घोड़े को देख कर उसकी बेटी भी बहुत खुश हुई।

पर जैसे ही वह उस घोड़े के साथ अकेली रह गयी पोम और पील दोनों उस घोड़े में से बाहर निकल आये। उनको देख कर वह लड़की डर गयी।

उन्होंने उससे कहा — "तुम डरो नहीं। हमने सुना था कि तुम बहुत सुन्दर हो तो बस हम तो तुमको केवल देखना चाहते थे सो यहॉ इस तरीके से हमने तुम्हें देख लिया।

अब अगर तुम यह चाहती हो कि हम लोग यहॉ से चले जायें तो हम चले जायेंगे पर अगर तुमको हमारा संगीत पसन्द हो और तुम

चाहती हो कि हम तुम्हारे लिये वह संगीत बजाते रहें तो हम वह संगीत बजाते रहेंगे। फिर किसी के बिना जाने कि हम यहॉ कभी आये भी थे हम चले जायेंगे।"

लड़की को उनका संगीत अच्छा लगा तो वे वहॉ रुक गये और अपना संगीत उसको सुनाते रहे और फिर कुछ देर बाद तो वह उनको खुद ही जाने नहीं देना चाहती थी।

तो पोम बोला — "अगर तुम हमको यहॉ से नहीं जाने देना चाहतीं तो फिर चलो हमारे साथ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूॅ।"

वह लड़की तैयार हो गयी। वे तीनों उस घोड़े के पेट में छिप गये और वह घोड़ा फिर अपने पहियों पर चलने लगा। वे तीनों वहॉ से चल कर रात काटने के लिये शाम को आ कर एक सराय में ठहर गये।

जैसे ही वे लोग वहॉ से गये वह जादूगर घर लौटा और अपनी बेटी को आवाज लगायी पर कोई नहीं बोला। उसको उसने इधर उधर भी ढूॅढा पर जब उसको उसके महल में नहीं पाया तो अपने चौकीदारों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने तो उसको महल से बाहर जाते नहीं देखा।

तब उस जादूगर को लगा कि उसके साथ चाल खेली गयी है। यह सोच कर वह बहुत गुस्सा हो गया। वह अपने महल के छज्जे पर गया और अपनी बेटी को तीन शाप दिये।

"उसको तीन घोड़े मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वे सब घोड़े प्यारे होंगे जैसे कि उसने अभी एक घोड़े से प्यार किया। वह सफेद घोड़े पर चढ़ेगी और यह सफेद घोड़ा उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर उसको तीन सुन्दर छोटे छोटे कुत्ते मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वह काले कुत्ते को पसन्द करेगी जैसे कि वह करती है और वह काला कुत्ता भी उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर जब वह रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायेगी तो उसके कमरे में एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा। वह खिड़की के रास्ते से आयेगा और उसको काट कर मार देगा।"

जब वह जादूगर ये तीन शाप अपने छज्जे पर से चिल्ला रहा था तो तीन बूढ़ी परियॉ नीचे सड़क पर से गुजर रहीं थी। उन्होंने ये शाप सुने और वे ये शाप सुनती हुई चलती गयीं और चलती गयीं।

अपनी लम्बी यात्रा के बाद शाम को थक कर वे परियॉ भी इत्तफाक से उसी सराय में रुकीं जिसमें पोम, पील और जादूगर की वह बेटी रुके हुए थे।

जैसे ही वे अन्दर घुसीं तो एक परी बोली — "ज़रा उस जादूगर की बेटी को देखना। अगर उसको अपने पिता के तीनों शापों का पता चल जाये तो वह तो बेचारी तो ठीक से सो भी नहीं सकेगी।"

उसी सराय में एक बैन्च पर पोम, पील और जादूगर की बेटी भी सो रहे थे। पोम और जादूगर की बेटी तो सो गये थे पर पील को अभी नींद नहीं आयी थी।

पील इतना अक्लमन्द था कि वह एक ऑख खोल कर सोता था इसी लिये उसको पता रहता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है और इसी लिये यह परी भी क्या कह रही थी यह सब भी उसने सुन लिया था।

परी आगे बोली — "अगर उस जादूगर की यह इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन घोड़े मिलें – सफेद, लाल और काला और वह सफेद घोड़े पर बैठे जो उसके सारे किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर का देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो और वह उस सफेद घोड़े का सिर तुरन्त ही काट दे तो उस लड़की को कुछ नहीं होगा।"

इस पर तीसरी परी बोली — "और जो भी इस बात को अपने मुॅह से निकालेगा वह पत्थर बन जायेगा।"

इसके बाद पहली परी फिर बोली — "इसके बाद जादूगर की इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलें और वह उन कुत्तों में से उसी कुत्ते को चुने जिसको वह जादूगर उससे चुनवायेगा यानी काले कुत्ते को चुने और वह उसके किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस काले कुत्ते का सिर काट देगा और फिर उसको कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह किसी से कुछ भी बोला तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

पहली परी फिर बोली — "उसकी तीसरी और आखिरी इच्छा यह है कि जब वह रात को अपने बिस्तर पर सोने जाये तो उसकी खिड़की से एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा और उसको मार डालेगा। तो यह भी हो कर ही रहेगा।"

तो दूसरी परी फिर बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस सॉप का सिर काट देगा और फिर उसे कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह एक शब्द भी किसी को बतायेगा तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

इस तरह पील को तीनों भयानक भेदों का पता चल गया जिन को अगर वह ठीक से बर्तता तो जादूगर की बेटी की जान बचा सकता था और अगर किसी और को बताता तो वह खुद पत्थर का बन जाता।

अगले दिन पोम, पील और वह जादूगर की बेटी तीनों वह सराय छोड़ कर आगे चले जहॉ पोम का पिता उन लोगों के लिये

तीन घोड़े लिये इन्तजार कर रहा था – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही कूद कर सफेद घोड़े पर बैठ गयी पर पील भी तेज था। उसने भी तुरन्त ही उस घोड़े का सिर काट दिया।

पोम बोला — "यह तुमने क्या किया पील? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुमने उसे मार डाला? वह घोड़ा तो मुझको बहुत ही प्यारा था।"

पील बोला —"मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हारा वह प्यारा घोड़ा मार दिया पर यह सब मैं तुमको अभी नहीं बता सकता।"

जादूगर की बेटी बोली — "पोम, इस पील का दिल तो बहुत ही खराब है। मैं अब इसके साथ नहीं जाऊँगी।"

पर पील ने यह मान लिया कि उसने पागलपन में उस घोड़े को मार डाला था और उसने इस बात के लिये जादूगर की बेटी से माफी भी माँग ली। जादूगर की बेटी ने उसको माफ कर दिया।

पोम के पिता उन सबको ले कर अपने घर पहुँचे तो वहाँ तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते उनका स्वागत करने आये – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही काले छोटे कुत्ते को उठाने के लिये झुकी कि पील ने अपनी तलवार से तुरन्त ही उस काले कुत्ते का सिर काट दिया।

जादूगर की बेटी बड़ी ज़ोर से चिल्लायी — "तुम तो बहुत ही पागल और बेरहम आदमी हो पील। दूर हो जाओ मेरी नजरों से। तुमने पहले मेरा घोड़ा मार दिया और अब यह प्यारा सा छोटा सा कुत्ता भी मार दिया।"

उसी समय पोम के माता पिता भी बाहर निकल आये। उन्होंने खुशी खुशी अपने बेटे और बहू का स्वागत किया और बहू को समझाया कि वह एक बार पील को फिर से माफ कर दे।

पर शाम को खाने के समय जबकि सब लोग बहुत खुश थे पील कुछ उदास और अकेला सा बैठा था। कोई उसको उकसा कर अपने साथ बातें करने पर मजबूर भी नहीं कर पा रहा था।

लोगों ने उससे पूछने की कोशिश भी की कि वह उदास सा क्यों था पर उसने सबको यह कह कर टाल दिया था कि कोई खास बात नहीं थी बस वह ज़रा थका हुआ था।

वह दावत से पहले ही यह कह कर उठ कर वहाँ से चला गया कि अपनी थकान की वजह से उसको नींद आ रही थी और वह सोने जा रहा था। पर वह अपने कमरे की बजाय पोम के सोने के कमरे में जा कर उसके पलंग के नीचे छिप गया।

जब पोम और जादूगर की बेटी सोने के लिये अपने कमरे में आये और अपने पलंग पर लेटे तो पील पलंग के नीचे से उनके कमरे की खिड़की पर निगाह जमाये हुए था।

जब पोम और जादूगर की बेटी गहरी नींद सो गये तो पील ने उस कमरे की खिड़की का शीशा टूटने की आवाज सुनी। उसकी ऑखें तो खिड़की की तरफ ही लगी थीं।

उसने देखा कि बहुत बड़ा सॉप उस खिड़की से हो कर कमरे के अन्दर आने की कोशिश रहा था। पील तुरन्त ही पलंग के नीचे से बाहर निकला और अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया।

इस शोर से जादूगर की बेटी की ऑख खुल गयी। उस समय उसको वह बड़ा सॉप तो दिखायी नहीं दिया क्योंकि वह तो गायब हो गया था बस केवल पील ही अपने हाथ में नंगी तलवार लिये वहॉ खड़ा दिखायी दिया।

उसको इस तरीके से खड़ा देख कर वह ज़ोर से चिल्लायी — "बचाओ बचाओ। हत्या हत्या। यह पील हमको मारना चाहता है। मैंने उसको दो बार तो माफ कर दिया पर अबकी बार मैं उसको माफ नहीं कर सकती। इस बार तो इस जुर्म के लिये उसको मरना ही पड़ेगा।"

यह सुन कर सब जाग गये और पोम के सोने के कमरे की तरफ भागे। पील को पकड़ कर जेल भेज दिया गया और तीन दिन बाद उसको फॉसी लगाने का दिन निश्चित कर दिया गया।

यह सोच कर कि अब चाहे वह यह भेद किसी को बताये या न बताये उसे तो मरना ही है सो उसने मरने से पहले पोम की पत्नी को तीन बातें बताने की इजाज़त माँगी। उसको इजाज़त दे दी गयी। पोम की पत्नी उससे मिलने के लिये जेल में आयी।

पील ने उससे कहा — "तुम्हें याद है जब हम तुम्हारे पिता के घर से भाग कर पहली बार एक सराय में रुके थे?"

"हाँ हाँ बिल्कुल याद है।"

"उस समय तुम और तुम्हारा पति तो सो रहे थे पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उस समय जागा हुआ था। उस समय वहाँ तीन परियाँ आयीं और उन्होंने आपस में बात की कि तुम्हारे जादूगर पिता ने तुमको तीन शाप दिये।

पहला शाप तो यह कि तुमको तीन घोड़े मिलेंगे – सफेद, लाल और काला। पर तुम सफेद घोड़े पर चढ़ोगी जो तुम्हारा सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई सफेद घोड़े का गला काट देगा तो तुम बच जाओगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।"

जैसे ही पील ने अपनी यह बात खत्म की उस बेचारे के पैर और टाँगें संगमरमर की हो गयीं। जादूगर की बेटी समझ गयी। वह रुआँसी हो कर बोली — "पील, बस इतना काफी है और आगे कुछ मत बोलना।"

पर वह आगे बोलता ही गया — "मुझे तो मरना ही है चाहे मैं बोलूँ या न बोलूँ इसलिये मैं बोलने के बाद मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा।

उन तीनों परियों ने यह भी कहा कि जादूगर का अपनी बेटी को दूसरा शाप यह था कि फिर उसको तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलेंगे – सफेद, लाल और काला।

पर वह काले कुत्ते को अपनी गोद में उठायेगी जो उसका सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई उस काले कुत्ते को मार देगा तो वह बच जायेगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।"

जब पील ने कुत्ते वाला शाप पोम की पत्नी को बताया तो उसका शरीर उसकी गर्दन तक संगमरमर का हो गया। जादूगर की बेटी यह सब सुन कर रो पड़ी।

वह रोते रोते बोली — "पील, मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। मैं समझ गयी। अब कुछ और मत कहो।"

पर क्योंकि अब पील का गला पत्थर का हो चुका था और उसका जबड़ा भी पत्थर का हो रहा था उसकी आवाज भर्रा रही थी।

उसी भर्रायी हुई आवाज में उसने कहा — "और जो कोई इस बात को अपने मुँह से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।"

और यह कहने के बाद तो वह सिर से पैर तक संगमरमर की मूर्ति ही बन गया। पोम की पत्नी बहुत ज़ोर से रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी — "आह यह मैंने क्या किया। मैंने एक ऐसे वफादार आदमी को मार दिया जिसने मेरी जान बचायी।"

फिर कुछ सोच कर उसने अपने ऑसू पोंछे और बोली अगर इस आदमी को कोई फिर से ज़िन्दा कर सकता है तो वह हैं मेरे पिता जी खुद।

सो उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी — "प्रिय पिता जी, आप मुझे माफ कर दें और मेहरबानी कर के तुरन्त ही यहॉ आ जायें।"

वह जादूगर अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसकी चिट्ठी मिलते ही वह अपनी बेटी के पास दौड़ा चला आया।

उसकी बेटी ने उसे चूमा और बोली — "पिता जी, मुझे आपसे एक सहायता चाहिये। ज़रा इस बेचारे नौजवान को देखिये। आपके तीन शापों से मेरी रक्षा कर के मेरी जान बचाने के बदले में यह बेचारा सारा का सारा पत्थर का हो गया है। मेहरबानी कर के आप इसको ज़िन्दा कर दीजिये।"

जादूगर बोला — "बेटी तुम्हारे प्यार की खातिर मैं यह भी करूँगा।" उसने अपनी जेब से बालसम[4] के मरहम की एक शीशी निकाली और पील के सारे शरीर पर चुपड़ दी। उस मरहम के लगाते ही पील तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया।

इस तरह फिर उसे फाँसी के फन्दे की तरफ ले जाने की बजाय वे लोग उसको एक गाड़ी में बिठा कर गाते बजाते और "पील ज़िन्दाबाद" के नारे लगाते हुए घर ले गये।

इस तरह पील ने जादूगर की बेटी की जान बचायी और जादूगर की बेटी ने पील की जान बचायी।

[4] Balsam (also called Turpentine) is a kind of sweet smelling sap of certain trees and shrubs used for medicinal purposes. It has flowers also. See the picture of its flower above.

2 सोने के तीन पहाड़ों की रानी[5]

शाप की इस लोक कथा में एक लड़की पर जादू डाल दिया जाता है कि वह तब तक एक तालाब के पानी में डूबी रहे जब तक उसके महल में कोई तीन रात न सो ले।

तो आओ देखते हैं कि कोई उसको उस पानी में निकालने के लिये तीन रात उसके महल में सो पाया कि नहीं। और यही नहीं अभी तो कुछ और भी बाकी है...

एक बार एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसके तीन बेटे थे। यह आदमी बहुत बीमार था और बहुत दर्द में था।

एक दिन उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और बोला — "मेरे बेटो, तुम खुद देख रहे हो कि मैं बहुत बीमार हूँ और मरने वाला हूँ। मुझे बहुत अफसोस है कि मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये कुछ भी नहीं है।

मैं बस तुम लोगों से इतना कहना चाहता हूँ कि तुम लोग अच्छे इन्सान बन कर रहना और ऐसे ही काम करना जैसे मैं करता रहा हूँ। भगवान तुम्हारी सहायता जरूर करेंगे।" और इतना कह कर वह आदमी मर गया।

---

[5] The Queen of the Three Mountains of Gold – a folktale from Italy from its Bologna area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. A part translation of this book is available in Hindi in seven parts from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

सबसे बड़े लड़के ने कहा — "चलो बाहर चल कर कहीं काम ढूँढते हैं जैसा कि पिता जी ने कहा है।" सो वे तीनों दुनियॉ में अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये बाहर निकल गये।

चलते चलते जब रात हुई तो उन्होंने देखा कि वे एक बहुत सुन्दर महल के पास खड़े हैं। सो रात को सोने के लिये उन्होंने उस महल का दरवाजा खटखटाया।

उन्होंने आवाज भी लगायी और चारों तरफ देखा भी पर वहॉ उनको कोई दिखायी नहीं दिया। सो वे अन्दर चले गये। उन्होंने अन्दर जा कर देखा तो अन्दर एक मेज पर बहुत अच्छे अच्छे खाने सजे हुए थे।

उन खानों को देख कर वे भौंचक्के रह गये पर फिर सबसे बड़ा बेटा बोला — "क्योंकि घर में कोई भी नहीं है तो चलो बैठ कर खाना खाते हैं। अगर कोई आयेगा भी है तो हम उससे इजाज़त मॉग लेंगे।"

सो वे तीनों खाना खाने बैठ गये। उन्होंने पेट भर खाना खाया और मन भर कर पिया। खा पी कर वे महल देखने के लिये निकले।

घूमते घूमते वे एक कमरे में आये जिसमें एक पलंग बिछा हुआ था और उसके ऊपर फूलों की माला पड़ी हुई थी। फिर वे एक दूसरे कमरे में आये। उसमें भी एक पलंग था और उसके ऊपर सोने की पत्तियों का सिरहाना लगा हुआ था।

लड़कों ने आपस में कहा — "ऐसा लगता है कि ये पलंग हमारे लिये ही लगे हैं सो इन पर सोया जाये।" उन्होंने अपने अपने सोने के लिये एक एक कमरा चुन लिया।

सबसे बड़े लड़के ने कहा — "ध्यान रखना कि तुम लोग यहाँ से जाने के लिये सुबह सवेरे जल्दी ही उठ जाना। मैं यहाँ से जाने के लिये किसी का इन्तजार नहीं करूँगा।"

सुबह को सबसे बड़ा लड़का काफी जल्दी उठ गया और किसी से बिना कुछ कहे ही वहाँ से चला गया। हालाँकि यह उसके लिये कुछ अजीब सी बात थी क्योंकि वह ऐसा कभी करता नहीं था।

जब बीच वाला लड़का उठा तो वह अपने बड़े भाई के कमरे में उसको देखने के लिये गया। वहाँ जा कर उसने देखा तो वह तो वहाँ था नहीं। वह वहाँ से चला गया था सो वह भी तैयार हुआ और वह भी घर छोड़ कर चला गया।

सबसे छोटा भाई काफी देर तक सोता रहा। जब वह उठा तो उसने देखा कि उसके दोनों भाई तो पहले ही जा चुके हैं।

फिर उसने देखा कि मेज पर नाश्ता लगा हुआ है सो उसने नाश्ता किया और बाहर देखने के लिये खिड़की पर जा खड़ा हुआ। उसके सामने बहुत सुन्दर बागीचा था। उसको लगा कि उसे उस बागीचे को जा कर देखना चाहिये।

सबसे छोटा भाई जिसका नाम सैन्ड्रीनो[6] था एक बहुत ही सुन्दर नौजवान था। जब वह बागीचे में घूम रहा था तो उस रास्ते के आखीर में जिस पर वह चल रहा था उसको एक बड़ा सा तालाब दिखायी दे गया।

उस तालाब में पानी की सतह के ऊपर गर्दन तक एक सुन्दर लड़की का सिर निकला हुआ था जो बिल्कुल भी नहीं हिल रहा था।

सैन्ड्रीनो आश्चर्य से बोला — "मैम, आप यहाँ क्या कर रही हैं?"

लड़की ने जवाब दिया — "तुम तो भगवान के भेजे हुए नौजवान लग रहे हो। मैं सोने के तीन पहाड़ों की रानी हूँ।

मेरे ऊपर जादू डाल दिया गया था कि मैं तब तक यहीं इसी पानी में रहूँ जब तक कि मैं किसी ऐसे आदमी से न मिलूँ जो कि इतनी हिम्मतवाला हो जो इस महल में तीन रात लगातार सो सके।"

सैन्ड्रीनो ने जवाब दिया — "अगर तुम्हारा जादू तोड़ने के लिये यही कुछ करना है तो मैं खुद यहाँ लगातार तीन दिन तक सोऊँगा। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो।"

लड़की बोली — "जो भी यहाँ लगातार तीन दिनों तक सोयेगा मैं उसी आदमी से शादी कर लूँगी। जब तुम यहाँ सोओगे तो तुमको अगर कुछ सुनायी दे या जंगली जानवर अपने कमरे में आते दिखायी दें तो तुम डरना नहीं।

[6] Sandrino – the name of the third and the youngest brother

अगर तुम जहॉ होगे वहीं रहोगे तो वे तुमको छुऐंगे भी नहीं और तुम्हारे पास से चले जायेंगे।"

"तुम चिन्ता न करो मैं बिल्कुल नहीं डरूँगा और मैं वैसा ही करूँगा जैसा तुमने कहा है।"

रात को सैन्ड्रीनो सोने के लिये चला गया। जैसे ही रात के बारह बजे उसे कुछ आवाजें सुनायी दीं तो उसको लगा कि वह तो जंगली जानवरों के चिल्लाने की आवाजें थीं।[7]

सैन्ड्रीनो ने सोचा कि अब वह देखेगा कि वहॉ क्या होता है।

इतने में उसके कमरे में भेड़िये, भालू, चीलें, सॉप और अनगिनत दूसरे किस्म के जंगली और बहुत भयानक जानवर आ कर उसके पलंग के चारों तरफ इकट्ठा हो गये। पर सैन्ड्रीनो बिल्कुल भी नहीं डरा।

कुछ पल में ही वे सब जानवर वहॉ से बाहर चले गये, और बस उनके जाने के बाद सब कुछ शान्त हो गया। सुबह होने पर वह लड़का तालाब पर वापस आया।

उसने देखा कि रानी अब पानी से कमर तक बाहर निकल आयी है। वह बहुत खुश थी और उसकी बहुत तारीफ कर रही थी।

[7] [My Note : It is very strange that when these princes slept the previous night those animals did not come there, and they appeared only just after talking to the princess.]

अगली रात को सैन्ड्रीनो के कमरे में और ज़्यादा जानवरों का संगीत गूँज उठा पर उस रात भी सैन्ड्रीनो डरा नहीं और चुपचाप वहीं लेटा रहा।

अगली सुबह जब वह तालाब पर आया तो रानी केवल आधी टाँगों तक ही पानी में थी। उस दिन तो रानी ने उसकी तारीफ में आसमान तक पुल बाँध दिये। सैन्ड्रीनो मुस्कुराता हुआ नाश्ते के लिये चला गया।

आज उसके वहाँ सोने की आखिरी रात थी। उस रात जानवर बहुत ज़ोर से चिल्लाये और उसके पलंग के बहुत पास भी आ गये। पर उस दिन भी सैन्ड्रीनो डरा नहीं और वे उसे ऐसा का ऐसा ही छोड़ कर चले गये।

अगले दिन सुबह जब वह तालाब पर गया तो रानी के केवल पैर ही पानी में थे। उसने रानी का हाथ पकड़ा और उसको तालाब से बाहर निकाल लिया।

रानी की दासियाँ भी वहाँ आ गयीं और फिर सब लोग नाश्ते के लिये चले गये। तीन दिन के बाद की उनकी शादी की तारीख भी पक्की हो गयी।

शादी के दिन सुबह रानी ने सैन्ड्रीनो से कहा — "शादी से पहले मैं तुमको एक बहुत ही जरूरी बात बता देना चाहती हूँ। जब तुम चर्च में प्रार्थना वाली बैन्च पर अपने घुटने टेकोगे तब तुम सो नहीं

जाना क्योंकि अगर तुम सो गये तो मैं वहॉ से भाग जाऊॅगी और फिर तुमको मैं कहीं दिखायी नहीं दूॅगी।"

सैन्ड्रीनो हॅस कर बोला — "अरे बस यही बताना था? मैं वहॉ उस जगह सो कैसे सकता हूॅ?"

उसके बाद वे दोनों चर्च चले गये। जैसे ही वह वहॉ प्रार्थना वाली बैन्च पर घुटनों के बल बैठा तो उसको इतनी ज़ोर की नींद आयी कि वह तो पल भर में ही सो गया। उसको तो पता ही नहीं चला कि कब उसकी ऑख लग गयी। उसके सोते ही रानी वहॉ से भाग गयी।

कुछ मिनट बाद ही सैन्ड्रीना की ऑख खुल गयी। उसने देखा तो रानी तो वहॉ पर नहीं थी। उसने कई बार उफ़ उफ़ कहा। फिर वह महल वापस आ गया। वहॉ भी उसने रानी को ढूॅढा पर वह वहॉ भी नहीं थी। अब वह समझा कि वह रानी क्या कह रही थी।

उसने वहॉ से पैसों का एक थैला उठाया और रानी को ढूॅढने चल दिया।

सारा दिन चलने के बाद रात को वह एक सराय में आया। वहॉ उसने उस सराय वाले से पूछा कि क्या उसने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को कहीं देखा है।

वह बोला — "मैंने खुद तो उसको नहीं देखा पर क्योंकि मैं दुनियॉ के सारे जानवरों का मालिक हूॅ इसलिये मैं उनसे पूछूॅगा अगर उन्होंने उसे कहीं देखा हो तो।"

उसने एक सीटी बजायी और तुरन्त ही कुत्ते, बिल्ले, चीते, शेर, बन्दर और बहुत सारे और जानवर वहॉ आ गये। सराय के मालिक ने उन सबसे पूछा — "क्या तुम लोगों में से किसी ने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को देखा है?"

जानवर बोले — "नहीं। हमने नहीं देखा।"

यह सुन कर सराय के मालिक ने सब जानवरों को वापस भेज दिया। फिर वह सैन्ड्रीनो से बोला — "कल सुबह मैं तुमको अपने भाई के पास भेजूँगा। वह सारी मछलियों का मालिक है। वहॉ जा कर उनसे पूछना कि वे क्या कहती हैं।"

अगली सुबह सैन्ड्रीनो ने सराय के मालिक को पैसों का एक थैला दिया और उसके भाई के घर चला गया। जब सराय के मालिक के भाई ने सुना कि सैन्ड्रीनो को उसके भाई ने भेजा है तो उसने उसको अपनी सराय में बुलाया और उससे कहा कि वह अगर ज़रा सा रुके तो वह अभी अपनी सारी मछलियों को बुलाता है।

उसने भी एक सीटी बजायी और सब तरह की मछलियॉ वहॉ आ पहुँची। पूछने पर कि क्या उन्होंने सोने के तीन पहाड़ों की रानी को देखा है उन सबने भी एक आवाज में कहा कि उन्होंने तो उसको नहीं देखा।

यह सुन कर उसने उन सब मछलियों को वापस भेज दिया और सैन्ड्रीनो से कहा — "कल तुमको मैं अपने दूसरे भाई को पास

भेजूँगा। वह चिड़ियों का मालिक है। शायद चिड़ियों ने उसे देखा हो।"

सैन्ड्रीनो अगले दिन का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करने लगा। जैसे ही सुबह हुई वह वहाँ से चल दिया। चलते चलते वह तीसरी सराय में पहुँचा।

वहाँ के मालिक ने कहा मैं अभी तुम्हारा काम करता हूँ। कह कर उसने भी एक बार सीटी बजायी तो दुनियाँ भर की सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं। बस उनमें एक गरुड़[8] गायब था।

सराय के मालिक ने दूसरी सीटी बजायी तब वह आया और बोला — "अफसोस मुझे थोड़ी सी देर हो गयी। मैं राजा मरोन[9] के दरबार में एक दावत में गया हुआ था। वहाँ वह सोने के तीन पहाड़ों की रानी के साथ शादी कर रहे हैं।"

यह सुन कर तो सैन्ड्रीनो की सब उम्मीदें ही खत्म हो गयीं पर तब सब चिड़ियों के मालिक ने उससे कहा — "तुम दुखी न हो। हम इसका भी कोई न कोई रास्ता जरूर निकालेंगे।"

उसने गरुड़ से पूछा — "क्या तुम इस नौजवान को राजा मरोन के दरबार में ले जा सकते हो?"

[8] Translated for the word "Eagle". See its oicture above.

[9] King Marone

गरुड़ बोला — "मैं इसको अभी ले जाता हूँ। पर मेरी एक शर्त है कि जब भी मैं पानी माँगू तो यह मुझे पानी दे। जब भी मैं रोटी माँगू तो यह मुझे रोटी दे। और जब भी मैं माँस माँगू तो यह मुझे माँस दे। नहीं तो मैं इसको समुद्र में फेंक दूँगा।"

उस नौजवान ने दो टोकरी भर कर रोटी रखीं। दो डिब्बे भर कर पानी रखा। और दो पौंड माँस रखा। सैन्ड्रीनो और यह सब ले कर वह गरुड़ हवा में उड़ चला। रास्ते में गरुड़ की हर चीज़ की माँग तुरन्त ही पूरी कर दी गयी।

पर माँस खत्म हो चुका था और उनको तो अभी समुद्र पार करना था। सो अगली बार गरुड़ ने जब माँस माँगा तो सैन्ड्रीनो कुछ और तो सोच नहीं सका उसने अपनी टाँग का माँस काट कर उसको खिला दिया।

रानी ने उसको पहले से ही जादू का एक मरहम दे रखा था। माँस काटने के बाद उसने वह मरहम अपनी टाँग पर लगा लिया तो उस मरहम से उसकी टाँग तुरन्त ही ठीक हो गयी।

गरुड़ उसको सीधे रानी के कमरे में ले गया। जैसे ही उन दोनों ने एक दूसरे को देखा वे एक दूसरे से खुशी के मारे लिपट गये। फिर दोनों ने एक दूसरे से अपनी अपनी कहानी कही।

रानी सैन्ड्रीनो को राजा के पास ले गयी और उसको अपना बचाने वाला और दुलहा कह कर उसका परिचय कराया।

राजा ने भी सोचा कि यह नौजवान तो उसकी लड़की के लिये बिल्कुल ठीक दुलहा है सो उसने उन दोनों की शादी की घोषणा कर दी और शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं।

दोनों की शादी हो गयी। शादी की ये तैयारियॉ और खुशियॉ एक महीना और एक हफ्ते तक चलीं। शादी के बाद वे दोनों खुशी खुशी रहे।

3 चोर फाख्ता[10]

यह लोक कथा एक जादू डालने की लोक कथा है। इस कथा में एक राजकुमार के ऊपर यह जादू डाल दिया जाता है कि वह

आदमी के रूप में अपने घर के बाहर नहीं जा सकता था जब तक कि कोई लड़की उसको उस मकान की खिड़की पर एक साल, एक महीने और एक दिन के लिये धूप में और तारों की रोशनी में उस पहाड़ की तरफ देखती हुई न बैठे जहॉ वह फाख्ता[11] के रूप में उड़ता रहेगा।

है न कुछ अजीब सी बात? भला तेरह महीने चौबीस घंटे इस तरह से कोई आदमी कैसे बैठ सकता है? तो लो देखते हैं कि क्या हुआ उस राजकुमार का।

एक बार एक राजा और रानी की एक बेटी थी जिसके बहुत सुन्दर और लम्बे बाल थे जिनको वह किसी को छूने भी नहीं देती थी। वह खुद ही उनमें कंघी करती और खुद ही उनको सॅवारती थी।

एक दिन जब वह अपने बाल सॅवार रही थी तो उसने अपनी कंघी खिड़की पर रख दी। उसी समय एक फाख्ता वहॉ आयी और उस कंघी को ले कर उड़ गयी।

---

[10] The Thieving Dove – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[11] Translated for the word "Dove". See its picture above.

"ओह मेरे भगवान। यह फाख्ता तो मेरी कंघी ही ले कर उड़ गयी।" पर जब तक वह कुछ करती तब तक तो वह फाख्ता वहॉ से काफी दूर जा चुकी थी।

अगली सुबह राजकुमारी फिर उसी खिड़की के पास बैठी अपने बाल संवार रही थी कि वही फाख्ता फिर से वहॉ आयी और उसके बालों मे लगाने वाला क्लिप उठा कर ले गयी।

तीसरे दिन अभी उसने अपने बाल खोले भी नहीं थे और उसके कन्धे पर अभी कपड़ा पड़ा ही था कि वही फाख्ता फिर से आयी और उसका कपड़ा उठा कर ले गयी।

इस बार राजकुमारी बहुत दुखी हुई। उसने रेशम की सीढ़ी नीचे गिरायी और उस सीढ़ी से उतर कर फाख्ता के पीछे भागी।

पर यह फाख्ता और दूसरी फाख्ताओं की तरह से उड़ नहीं गयी बल्कि अपने पीछे पीछे उसके आने का इन्तजार करती रही और जब वह पास आ जाती तो फिर थोड़ी दूर उड़ जाती। यह देख कर राजकुमारी उससे और ज़्यादा गुस्सा हो गयी।

पर इस तरह से थोड़ी थोड़ी दूर भगाते भगाते वह फाख्ता राजकुमारी को जंगल तक ले आयी। वहॉ जंगल में एक अकेला मकान खड़ा था। वह फाख्ता उस मकान में घुस गयी।

मकान का दरवाजा खुला हुआ था सो राजकुमारी को उस मकान में एक सुन्दर नौजवान बैठा दिखायी दे गया। राजकुमारी ने

उससे पूछा — "क्या तुमने यहॉ किसी फाख्ता को मेरा कपड़ा लाते देखा है?"

नौजवान बोला — "हॉ देखा है। मैं ही वह फाख्ता हूँ जो तुम्हारा कपड़ा ले कर उड़ गया।"

"तुम?"

"हॉ मैं।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"मेरे ऊपर परियों ने जादू डाल रखा है कि मैं आदमी के रूप में अपने इस घर के बाहर नहीं जा सकता जब तक कि तुम इस मकान की खिड़की पर एक साल, एक महीने और एक दिन के लिये धूप में और तारों की रोशनी में उस पहाड़ की तरफ देखती हुई न बैठो जहॉ मैं फाख्ता के रूप में उड़ता रहूँगा।"

बिना किसी हिचक के राजकुमारी उसके मकान की खिड़की पर बैठ गयी। वह नौजवान वहॉ से फाख्ता बन कर उड़ गया और जा कर सामने वाले पहाड़ पर बैठ गया।

एक दिन गुजरा, दो दिन गुजरे, तीसरा दिन गुजरा। राजकुमारी वहीं पहाड़ की तरफ देखती बैठी रही। हफ्ते गुजर गये वह वहीं दिन रात बैठी रही। ऐसा लगता था जैसे कि वह लकड़ी की बनी हो।

धीरे धीरे वह सॉवली पड़ती गयी और फिर इतनी काली पड़ गयी जितना कि अँधेरा। इस तरह वह वहॉ एक साल, एक महीना, और एक दिन बैठी रही। समय खत्म होने पर वह फाख्ता आदमी में बदल गयी और फिर वह आदमी पहाड़ पर से नीचे आ गया।

जब उस नौजवान ने देखा कि राजकुमारी कितनी काली हो गयी है तो वह चिल्लाया — "ओह यह तुम कैसी हो गयी? क्या तुमको अपनी इस शक्ल से मेरे सामने आते में शर्म नहीं आ रही? जाओ यहॉ से।" यह कह कर उसने उसके ऊपर थूक दिया।

यह देख कर तो वह लड़की भौंचक्की रह गयी। यह क्या हो गया। उसने तो उसको उसके शाप से आजाद करने की कोशिश की और उसने उसके साथ ऐसा बर्ताव किया।

वह परेशान हो कर दुखी हो कर रोती हुई वहॉ से चली गयी। जाते समय वह एक जंगल से गुजर रही थी कि वहॉ उसको तीन परियॉ मिलीं।

परियों ने उससे पूछा — "क्या बात है तुम इतनी दुखी क्यों हो?"

रोते हुए उसने उनको अपनी सारी कहानी सुना दी।

परियॉ बोलीं —"तुम चिन्ता न करो। तुम बहुत दिनों तक ऐसी नहीं रहोगी।"

पहली परी ने उसके गालों को सहलाया तो वह फिर से बहुत सुन्दर हो गयी। बल्कि पहले से भी ज़्यादा सुन्दर हो गयी। वह अब सूरज चॉद की तरह से चमकने लगी।

दूसरी परी ने उसको छुआ तो वह एक रानी की तरह की पोशाक में सज गयी। तीसरी सबसे छोटी परी ने उसको एक टोकरी भर कर जवाहरात दिये।

यह कर के परियॉ बोलीं —"अब हम तीनों तुम्हारे साथ हमेशा तुम्हारी नौकरानी के वेश में रहेंगी।"

फिर वे सब उस देश में पहुॅचीं जिस देश का वह नौजवान राजा था। पलक झपकते ही उन परियों ने उस राजा के महल के सामने एक महल खड़ा कर दिया जो उसके महल से कहीं ज़्यादा खूबसूरत था – सौ गुना ज़्यादा खूबसूरत।

राजा ने बाहर की तरफ देखा तो उसको वह आश्चर्यजनक महल दिखायी दिया तो उसको लगा कि वह तो सपना देख रहा था। इतना सुन्दर महल तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसकी एक खिड़की पर उसको एक राजकुमारी बैठी नजर आयी। तो उसको देख कर तो वह उससे प्यार ही कर बैठा।

परियों ने कहा — "अगर वह तुमसे मिलना चाहे तो उसको मिलने के लिये उत्साहित करना।"

पहले दिन तो राजा उसको देखता रहा। दूसरे दिन उसने उसकी तरफ देख कर ऑखें झपकायीं और तीसरे दिन उसने उससे पूछा कि क्या वह उससे मिलने आ सकता था।

राजकुमारी ने जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, अगर आप मुझसे मिलने आना चाहते हैं तो पहले अपने छज्जे से मेरे छज्जे तक गुलाब के पंखुड़ियों का दो इंच मोटा कालीन बिछायें।"

राजा ने उसको अपनी शर्त पूरी तरह से कहने भी नहीं दी कि उसने अपने नौकरों को ऐसा एक कालीन बिछाने का हुक्म दे दिया जो गुलाब की पंखुड़ियों का बना हो और दो इंच मोटा हो।

बहुत सारी स्त्रियॉ गुलाब की पंखुड़ियॉ तोड़ने में लग गयीं। ऐसा तो पहले कभी किसी ने देखा नहीं था।

जब गुलाब की पंखुड़ियों का कालीन बिछ गया तो परियों ने राजकुमारी से कहा "अब तुम एक बहुत ही शानदार राजकुमारी की तरह से तैयार हो जाओ और इस कालीन पर चलो। जब तुम आधे रास्ते पहुॅच जाओ तो बस तुम राजा को यह दिखाना कि तुम्हारे पैर में एक कॉटा चुभ गया है। बाकी हम देख लेंगे।"

सो राजकुमारी उस गुलाब की पंखुड़ियों से बने कालीन पर चली। वह गुलाबी रंग की पोशाक पहने थी। दूसरी तरफ राजा उसका बेसब्री से इन्तजार कर रहा था। राजकुमारी ने उसको कालीन पर पैर रखने से मना कर रखा था।

जब वह आधे रास्ते पहुँची तो चिल्लायी "अरे मैं मरी। मेरे पैर में तो कॉटा चुभ गया।" और उसने बेहोश होने का बहाना किया।

यह देख कर परियों ने उसको पकड़ा और उसको वापस उसके महल ले चलीं। राजा उसकी सहायता के लिये जाना चाहता था पर राजकुमारी ने उसको उस कालीन पर चलने से मना कर रखा था इसलिये वह उसके कहने के अनुसार वहीं रुक गया।

अपने महल से उसको राजकुमारी के महल में डाक्टर आते जाते दिखायी दे रहे थे। आखीर में उसको एक पादरी[12] भी दिखायी दिया। बस केवल राजा को ही उसके पास जाने की इजाज़त नहीं थी बाकी तो बहुत सारे लोग उसके पास तक आ जा रहे थे।

उसने फिर उड़ती उड़ती खबर सुनी कि उस कॉटे से राजकुमारी की टॉग इतनी सूज गयी कि उसकी तबियत बहुत खराब होती जा रही थी। चालीस दिन बाद उसने सुना कि राजकुमारी की बीमारी कुछ ठीक हो रही थी।

जब यह बात बाहर फैली तो राजकुमार ने फिर से उससे मिलने की बात की। परियॉ फिर बोलीं — "उससे कहो कि तुम उससे मिलोगी पर इस बार उसको तीन इंच मोटा चमेली के फूलों की पंखुड़ियों का कालीन बिछवाना होगा। और जब तुम उस कालीन पर आधी दूर पहुँचो तो फिर से कॉटा चुभने का बहाना करना।"

[12] Translated for the word "Priest"

तुरन्त ही राजा ने अपने लोगों को चमेली के फूलों को तोड़ने पर लगा दिया। बहुत जल्दी ही उन फूलों की पंखुड़ियों का तीन इंच मोटा कालीन राजकुमारी के महल से राजा के महल तक बिछा दिया गया।

जब राजकुमारी उस कालीन पर जाने लगी तो आधी दूर जाने पर वह चिल्लायी "अरे मैं तो मर गयी। एक कॉटा मेरे पैर में चुभ गया।" और वह चक्कर खा कर गिर पड़ी कि बीच में ही उसकी परियों ने उसको सॅभाल लिया और वे उसको उसके महल वापस ले गयीं।

राजा बेचारा फिर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने कई नौकर उसके पास भेजे पर उनमें से किसी को भी उससे मिलने नहीं दिया गया। और वह बेचारा राजकुमार दीवार से ही अपना सिर फोड़ता रह गया।

इस धक्के से वह खुद बीमार पड़ गया पर फिर भी वह अपने नौकर को राजकुमारी की तबियत का हाल जानने के लिये उसके महल में भेजता रहा।

जब उससे नहीं रहा गया तो खुद बीमार होते हुए भी उसने उससे मिलने की इजाज़त मॉगी क्योंकि वह उससे शादी करना चाहता था।

राजकुमारी ने कहा — "अब मैं उसके पास तभी आऊँगी जब मैं उसको ताबूत[13] में लेटा देखूँगी।"

यह जवाब सुन कर तो राजा का दिमाग ही घूम गया पर फिर भी उसने एक ताबूत तैयार करवाया जिसके चारों तरफ मोमबत्तियाँ लगी हुई थीं। अपने आपको मरा हुआ दिखाते हुए वह उस ताबूत में लेट कर राजकुमारी की खिड़की के नीचे से निकला।

वहाँ पहुँच कर उसके नौकरों ने कहा — "देखिये राजकुमारी जी, हमारे मरे हुए राजा को।"

राजकुमारी बाहर अपने छज्जे पर गयी और बोली — "उफ़, तुम इतना नीचे गिर गये हो? तुमने यह सब एक लड़की के लिये किया?" और यह कह कर उसके ऊपर थूक दिया।

यह सुन कर और यह देख कर उस राजा को याद आया कि उसने उस भली लड़की के साथ क्या किया था जो अँधेरे की तरह काली थी।

पर उसको अब लग रहा था कि वह लड़की इस लड़की से कोई ज़्यादा अलग नहीं थी जिसको वह प्यार करता था। अचानक उसको लगा कि वह काली लड़की और यह राजकुमारी तो दोनों एक ही थीं।

[13] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

तुम सोच सकते हो कि अब उसको कैसा लग रहा होगा। वह तो यह सोच कर ही झूठी लाश की बजाय सच्ची लाश जैसा हो गया।

पर उसी समय वे तीनों परियॉ वहॉ आ गयीं और उससे बोलीं कि उसकी राजकुमारी उसका इन्तजार कर रही थी। राजा उठ कर अन्दर गया और राजकुमारी से माफी मॉगी।

शाही चैपल खोला गया और उन दोनों की शादी हो गयी। राजा उन तीनों परियों को अपने पास रखने के लिये बहुत इच्छुक था पर उन्होंने उन दोनों को विदा कहा और वहॉ से चली गयीं। वह राजकुमार और राजकुमारी फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

4 एक छोटा चरवाहा[14]

शाप की इस लोक कथा में एक बच्चे को यह शाप मिलता है कि वह कभी बढ़े ही नहीं जब तक वह एक सुन्दर लड़की से शादी न कर ले। सो इस शाप में एक बच्चा अपने साइज़ से ज़्यादा बढ़ता ही नहीं है जब तक कि वह एक लड़की को नहीं पा लेता।

एक बार एक लड़का था जो भेड़ चराया करता था। वह लड़का साइज़ में एक छोटे से कीड़े से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

एक दिन जब वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये घास के मैदानों की तरफ जा रहा था तो वह एक अंडे बेचने वाली के पास से गुजरा। वह एक टोकरी में अंडे भर कर ले जा रही थी।

उसको देख कर उसे शरारत सूझी। उसने उस अंडे बेचने वाली की टोकरी की तरफ एक पत्थर फेंका और उस एक ही पत्थर से उस स्त्री की टोकरी में रखे सारे अंडे टूट गये।

इससे उस स्त्री को गुस्सा आ गया तो उसने उस लड़के को शाप दे दिया — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना[15] को नहीं ढूँढ लोगे।"

---

[14] The ittle Shepherd – a folktale from Genoa, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. A part translation of this book is available in Hindi in seven parts from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

[15] Bargaglina

उस दिन के बाद से वह लड़का और पतला दुबला होता चला गया। उसकी माँ उसकी जितनी ज़्यादा देखभाल करती वह उतना ही और पतला दुबला होता जाता।

एक दिन उसकी माँ ने उससे पूछा — "बेटा, तुझे क्या हो गया है? क्या तूने किसी का कुछ बुरा किया है जो उसने तुझे शाप दे दिया है? तू बड़ा ही नहीं होता।"

तब उसने अपनी नीचता की कहानी अपनी माँ को सुनायी कि कैसे उसने पत्थर मार कर एक अंडे बेचने वाली की टोकरी में रखे सारे अंडे तोड़ दिये थे।

और फिर उसने उस स्त्री के शब्द भी दोहरा दिये — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को नहीं ढूँढ लोगे।"

उसकी माँ बोली — "अगर ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इसके सिवा और कोई चारा नहीं है बेटा कि तुम उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढो।"

यह सुन कर वह लड़का उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने चल दिया।

चलते चलते वह एक पुल के पास आया। वहाँ एक स्त्री एक अखरोट के खोल में बैठी झूल रही थी। उसने उस लड़के को देखा तो पूछा — "उधर कौन जा रहा है?"

चरवाहा बोला — "एक दोस्त।"

"ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुमको देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी पलक उठा दी तो उसने उसी तरफ देख कर पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह पत्थर लेते जाओ शायद यह तुम्हारे काम आये।" कह कर उसने चरवाहे को एक पत्थर पकड़ा दिया। चरवाहे ने उससे वह पत्थर ले लिया और आगे चल दिया।

आगे जा कर उसको एक और पुल मिला जहाँ एक और छोटी स्त्री एक अंडे के खोल में बैठी नहा रही थी। उसने भी पूछा — "इधर कौन जा रहा है?"

चरवाहे ने जवाब दिया — "एक दोस्त।"

वह स्त्री बोली — "ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी भी पलक उठा दी तो उसने उसको देख कर पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह हाथी दाँत की कंघी लेते जाओ तुम्हारे काम आयेगी।" कह कर उसने चरवाहे को

एक कंघी दे दी। चरवाहे ने वह कंघी अपनी जेब में रखी, उसको धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक नाले के पास आया जहॉ एक आदमी उस नाले के पास खड़ा खड़ा अपने थैले में कोहरा भर रहा था। उस चरवाहे ने उस आदमी से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था। पर उसने भी वही जवाब दिया कि वह उसको नहीं जानता था।

पर उस आदमी ने उस चरवाहे को एक जेब भर कर कोहरा दे दिया और कहा कि वह उसको अपने साथ ले जाये उसके काम आयेगा। चरवाहे ने उस आदमी से कोहरा लिया और उसको धन्यवाद दे कर आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक चक्की के पास आया जो एक लोमड़े की थी। चरवाहे ने लोमड़े से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था।

लोमड़ा बोला — "हॉ मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर बरगैगलीना कौन है पर तुमको उसे ढूँढने में बहुत परेशानी होगी। तुम यहॉ से सीधे चले जाओ तो वहॉ तुमको एक घर मिलेगा। उस घर का दरवाजा खुला होगा।

तुम उस दरवाजे से अन्दर चले जाना तो वहॉ तुमको क्रिस्टल का एक पिंजरा दिखायी देगा। उस पिंजरे में बहुत सारी छोटी छोटी घंटियॉ लगी हैं। उसी पिंजरे में वे गाने वाले सेब रखे हैं।

तुम वह पिंजरा उठा लेना पर वहॉ एक बुढ़िया का ध्यान रखना क्योंकि वहॉ एक बुढ़िया भी होगी। अगर उसकी ऑखों खुली हों तो समझना कि वह सो रही है और अगर उसकी ऑखें बन्द हों तो समझना कि वह सब कुछ देख रही है।"

उस लोमड़े की इस सलाह के साथ वह चरवाहा और आगे बढ़ा और उस घर तक आ गया जो उसको लोमड़े ने बताया था। उस घर का दरवाजा वाकई खुला हुआ था सो वह उस घर के अन्दर चला गया।

घर के अन्दर जा कर उसने देखा कि वहॉ एक क्रिस्टल का एक पिंजरा रखा है जिसमें घंटियॉ लगी हुईं हैं और उसी के पास एक बुढ़िया बैठी है जिसकी ऑखें बन्द हैं।

क्योंकि उसकी ऑखें बन्द थीं इसलिये लोमड़े के कहे अनुसार वह सब कुछ देख रही थी। उस बुढ़िया ने चरवाहे से कहा — "ज़रा देखना तो मेरे बालों में कहीं कोई जूँ[16] तो नहीं हैं?"

[16] Translated for the word "Lice". See its picture above.

उसने उस बुढ़िया के बालों में झॉका और वह उसके सिर की जूँ निकाल रहा था कि उस बुढ़िया की ऑखें खुल गयीं। अब उसको पता चल गया कि वह अब सो गयी थी।

उसको सोता देख कर चरवाहे ने तुरन्त ही क्रिस्टल का वह पिंजरा वहॉ से उठाया और भाग लिया। पर वह पिंजरा ले जाते समय उसकी छोटी छोटी घंटियॉ बज उठीं और वह बुढ़िया जाग गयी। उसने उस चरवाहे के पीछे सौ घुड़सवार भेजे।

जब चरवाहे ने देखा कि वे घुड़सवार उसके काफी पास आ गये हैं तो उसने अपनी जेब में रखा पत्थर का टुकड़ा निकाल कर अपने पीछे फेंक दिया।

जमीन पर पड़ते ही उस पत्थर का एक बहुत बड़ा पहाड़ बन गया। कुछ घोड़े उससे टकरा कर मर गये और कुछ की टॉगें टूट गयीं। घोड़े बेकार होने की वजह से वे और आगे नहीं जा सके और सब घुड़सवार वापस लौट गये।

उन घुड़सवारों को वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार दो सौ घुड़सवार उसके पीछे भेजे। चरवाहे ने एक नया खतरा देखा तो अपनी जेब से हाथी दॉत की कंघी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

वह कंघी जहॉ गिरी थी वहॉ एक शीशे जैसा चिकना पहाड़ खड़ा हो गया जिस पर चढ़ते ही सारे घोड़े फिसल फिसल कर गिर पड़े और मर गये। सो वे दो सौ घुड़सवार भी वापस चले गये।

उनको वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार तीन सौ घुड़सवार भेजे। इतने सारे घुड़सवारों के देख कर उस चरवाहे ने अपनी जेब से कोहरा निकाल कर फेंक दिया। वह कोहरा सारे में फैल गया और वे सारे घुड़सवार उस कोहरे में खो कर रह गये।

इस बीच वह चरवाहा वहॉ से बच कर भाग तो लिया पर रास्ते में उसको प्यास लग आयी। रास्ते में उसके पास पीने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने सोचा कि वह पिंजरे में से एक सेब निकाल कर खा लेता है।

उसने पिंजरे में से एक सेब निकाला और उसको काटा तो उसमें से एक छोटी सी आवाज आयी — "सेब ज़रा धीरे से काटो वरना मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

यह सुन कर उसने वह सेब बड़ी धीरे काटा। उसमें से उसने आधा सेब खाया और दूसरा आधा सेब अपनी जेब में रख लिया। फिर वह अपने रास्ते चल पड़ा।

चलते चलते वह अपने घर के पास वाले कुँए पर आ गया। वहॉ उसने अपनी जेब में से दूसरा आधा सेब निकालने के लिये हाथ डाला तो वहॉ उसको उसका बचा हुआ सेब तो नहीं मिला, हॉ एक छोटी सी लड़की वहॉ जरूर खड़ी थी।

चरवाहा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ और मुझे केक बहुत पसन्द है। मुझे केक खाना है मुझे बहुत भूख लगी है।"

उस कुँए के चारों तरफ एक दीवार थी और बीच में एक छेद था सो चरवाहे ने उस सुन्दर बरगैगलीना को उस कुँए की दीवार पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब तक वह उसके लिये केक ले कर आता है वह उसका वहीं इन्तजार करे।

इसी बीच बदसूरत नाम की एक दासी वहाँ आयी। वह वहाँ उस कुँए से पानी खींचने आयी थी। उसको वहाँ वह सुन्दर सी छोटी सी लड़की दिखायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "यह कैसे हुआ कि यह तो इतनी छोटी सी है और इतनी सुन्दर है और मैं इतनी बड़ी हूँ और इतनी बदसूरत हूँ।"

यह सोच कर ही वह दासी इतनी गुस्सा हुई कि उसने उस छोटी सी लड़की को कुँए में फेंक दिया। जब चरवाहा उस छोटी सुन्दर बरगैगलीना के लिये केक ले कर वहाँ आया तो उसने देखा कि उसकी सुन्दर बरगैगलीना तो वहाँ थी ही नहीं।

उसका दिल टूट गया। कितनी मुश्किल से तो वह उसको ले कर आया था और अब जब वह मिल गयी थी तो वह गायब भी हो गयी। उस चरवाहे की माँ भी उसी कुँए पर पानी भरने आती थी। एक दिन पानी भरते समय उसकी बालटी में एक छोटी सी मछली आ गयी।

वह उस मछली को घर ले गयी और उसको खाने के लिये तल लिया। माँ ने वह तली हुई मछली खुद भी खायी और अपने बेटे को भी खिलायी। और उसकी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं।

उस मछली की हड्डियाँ जहाँ जा कर गिरीं वहाँ एक पेड़ उग आया और समय के साथ साथ वह पेड़ इतना बड़ा हो गया कि उसने चरवाहे के घर की रोशनी रोक दी।

यह देख कर उस चरवाहे ने उस पेड़ को काट डाला और उसकी लकड़ी को आग जलाने के काम में लाने के लिये घर के अन्दर रख लिया।

यह सब करते करते चरवाहे की माँ मर गयी और अब वह घर में अकेला रह गया। वह और भी दुबला होता जा रहा था। वह अपने बड़ा होने के लिये कुछ भी करता पर वह बड़ा ही नहीं हो पा रहा था।

रोज सुबह ही वह घास के मैदानों में चला जाता और रात होने पर ही घर लौटता। घर आ कर उसको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि सुबह जो बर्तन वह गन्दे छोड़ गया था वे सब साफ रखे हैं और उसका घर भी साफ है।

उसने सोचा कि यह जानने के लिये कि उसके घर में उसके पीछे यह सब कौन कर रहा है उसको एक दिन घर में रुकना ही पड़ेगा।

सो अगले दिन वह घर से बाहर जाने के लिये निकला तो पर बाहर नहीं गया। वह वहीं दरवाजे के पीछे छिप गया और देखता रहा कि उसके घर में उसके पीछे कौन आता है।

कुछ समय बाद ही उसने देखा कि लकड़ी के ढेर में से एक बहुत ही सुन्दर सी लड़की निकली। उसने उसके सारे बर्तन साफ किये, घर को झाड़ा बुहारा, उसका बिस्तर ठीक किया। फिर उसने आलमारी खोली और केक खाया।

बस इसी समय वह चरवाहा उछल कर दरवाजे के पीछे से बाहर निकल आया और उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम अन्दर कैसे आयीं?"

लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ। वह लड़की जिसको तुमने अपनी जेब में रखे आधे सेब में पाया था। जब तुम मुझको वहाँ कुँए पर बिठा कर चले गये तब वहाँ एक बदसूरत दासी आयी और उसने मुझे कुँए में धकेल दिया। कुँए में गिर कर मैं मछली बन गयी।

उसके बाद तुम लोगों ने मुझे तल कर खा लिया और मेरी हड्डियाँ बाहर फेंक दीं। वहाँ गिर कर मैं एक पेड़ बन गयी। तुमने वह पेड़ काट कर उसकी लकड़ी अपने घर में रख ली। अब जब तुम घर में नहीं होते तो मैं सुन्दर बरगैगलीना बन जाती हूँ।"

चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया कि उसको सुन्दर बरगैगलीना फिर से मिल गयी थी। अब वह चरवाहा दिन दूना रात

चौगुना बढ़ने लगा था और उसके साथ साथ वह सुन्दर बरगैगलीना भी बढ़ने लगी।

जल्दी ही वह चरवाहा बढ़ कर एक सुन्दर नौजवान हो गया और सुन्दर बरगैगलीना भी बड़ी हो कर और सुन्दर हो गयी। दोनों ने आपस में शादी कर ली और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

5 सेब वाली लड़की[17]

शाप की इस लोक कथा में एक लड़की को शाप है कि वह सेब के अन्दर ही रहेगी। एक परी उस सेब के ऊपर जादू के पाउडर छिड़कवा कर उसको उसके इस शाप को दूर करती है।

एक बार एक राजा और एक रानी थे जो इसलिये बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। रानी बराबर पूछती रहती — "मेरे भी उसी तरीके से बच्चे क्यों नहीं होते जैसे इस सेब के पेड़ के ऊपर सेब लगते है?"

सो हुआ यह कि एक दिन बजाय एक लड़के को जन्म देने के उस रानी ने एक सेब को जन्म दिया। पर यह सेब दुनियॉ के सब सेबों से ज़्यादा लाल और ज़्यादा सुन्दर था। राजा ने उस सेब को एक सोने की तश्तरी में रख कर अपनी बालकनी में रख दिया।

राजा के महल की सड़क के दूसरी तरफ भी एक राजा रहता था।

एक दिन वह दूसरा राजा अपनी खिड़की में खड़ा बाहर देख रहा था तो उसने देखा कि उसके सामने वाले राजा की बालकनी में

[17] Apple Girl – a folktale from Italy from its Florence area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. A part translation of this book is available in Hindi in seven parts from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

एक बहुत ही सुन्दर नहायी धोयी लड़की खड़ी अपने बालों में कंघी कर रही थी। वह लड़की सेब जैसी गोरी और गुलाबी थी।

उसको देख कर तो उसका मुँह खुला खुला रह गया और वह उसकी तरफ देखता का देखता रह गया।

पर जैसे ही उस लड़की को यह लगा कि कोई उसको देख रहा है तो वह वहाँ से भागी और तश्तरी में रखे सेब के अन्दर जा कर गायब हो गयी।

राजा को तो उससे पागलपन की हद तक प्यार हो गया था। सो उसके दिमाग ने कुछ काम किया और वह सड़क पार कर के उस दूसरे राजा के महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो रानी ने दरवाजा खोला।

राजा बोला — "रानी जी आप मेरे ऊपर एक कृपा करें।"

रानी बोली — "कहिये। पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आते हैं।"

राजा बोला — "आपकी बालकनी में जो सेब रखा है वह आप मुझे दे दें।"

रानी बोली — "राजा साहब क्या आप जानते हैं कि आप क्या कह रहे हैं? मैं उस सेब की माँ हूँ और आपको पता होना चाहिये कि मुझे उसके लिये कितना इन्तजार करना पड़ा।"

पर राजा को तो ना नहीं सुनना था इसलिये सेब के माता पिता को उस सेब को उस दूसरे राजा को देना ही पड़ गया ताकि पड़ोसियों में आपस में सम्बन्ध अच्छे रह सकें।

इस तरह वह राजा उस सेब को ले कर अपने घर आ गया और उसको ले जा कर सीधा अपने कमरे में चला गया। वहॉ उसने उस तश्तरी को अपने कमरे की एक मेज पर रख दिया। उसके नहाने धोने के लिये सब कुछ बाहर रख दिया।

अब वह लड़की रोज सुबह उस सेब में से नहाने और अपने बाल ठीक करने के लिये उस सेब में से निकलती और वह राजा उसको देखता रहता।

बस यही था जो वह सेब में से बाहर निकल कर करती थी। न तो वह कुछ खाती थी और न कोई बात करती थी। बस केवल नहाती थी और अपने बाल बनाती थी और फिर सेब के अन्दर चली जाती थी।

यह राजा अपनी सौतेली मॉ के साथ रहता था। उसकी मॉ को कुछ शक हुआ जब उसने देखा कि उसका बेटा लगातार अपने कमरे में अकेले ही रह रहा था। कहीं बाहर निकलता ही नहीं था।

उसने सोचा "चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े पर मुझे यह जरूर मालूम करना है कि मेरा बेटा अपने कमरे में बैठा बैठा क्या करता रहता है।"

उसी समय किसी और राजा ने उनके राज्य पर हमला कर दिया सो उस राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ गया।

जब उसको अपना सेब छोड़ना पड़ा तो उसका दिल टूट गया। उसने अपने एक बहुत ही भरोसे के नौकर को बुलाया और उससे

कहा — "मैं अपने कमरे की चाभी तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूँ। ज़रा ध्यान रखना कि कोई मेरे कमरे में न जाने पाये।

रोज उस सेब वाली लड़की के लिये पानी और कंघा बाहर रख देना और इस बात का भी ध्यान रखना कि उसको और भी जो चाहिये वह उसको मिल जाये। और हॉ भूलना नहीं कि वह मुझे सब बताती रहे।"

हालॉकि यह गलत था क्योंकि वह तो कभी बोली ही नहीं थी पर राजा ने सोचा कि नौकर को यह झूठ बताना जरूरी था।

"अगर मेरे पीछे उसका बाल भी बॉका हुआ तो मैं तुमको जान से मार दूँगा।"

नौकर बोला — "आप बिल्कुल बेफिकर रहिये, राजा साहब। मैं अपनी तरफ से उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करूँगा।"

जैसे ही राजा चला गया उसकी सौतेली मॉ ने अपनी हर कोशिश की कि वह राजा के कमरे में घुस जाये पर उसको मौका ही नहीं मिला।

एक बार उसने नौकर की शराब में अफीम मिला दी और जब वह उसको पी कर सो गया तो उसने उसके पास से राजा के कमरे की चाभी चुरा ली।

फिर उसने राजा के कमरे का दरवाजा खोला और अपने बेटे के इस अजीब से बर्ताव को जानने के लिये उसका सारा कमरा उलट

पुलट कर दिया ताकि उसको यह पता चल जाये कि वह ऐसा क्यों कर रहा था।

पर जितना वह ढूँढती थी उतना ही उसको कुछ नहीं मिल पा रहा था। बहुत सारी साधारण चीज़ों में उसको केवल एक ही अलग सी चीज़ दिखायी दी, और वह था एक शानदार सेब जो एक सोने के कटोरे में रखा था।

उसको लगा कि शायद यही सेब होगा जिसके बारे में वह हमेशा सोचता रहता होगा।

रानियाँ हमेशा ही एक छोटा सा चाकू अपने कपड़ों में छिपा कर रखती हैं सो उसने अपना वह चाकू निकाला और उस सेब को चारों तरफ से गोदना शुरू किया।

उसके सेब को हर गोदने से खून की एक धारा सी बह निकली। यह देख कर सौतेली माँ डर गयी और उस सेब को वहीं छोड़ कर वहाँ से भाग ली। चाभी उसने नौकर की उसी जेब में रख दी जहाँ से उसने निकाली थी।

जब नौकर की आँख खुली तो उसको तो पता नहीं था कि क्या हुआ। वह राजा के कमरे में गया तो देखा कि वहाँ तो सारी जगह खून बिखरा पड़ा था।

उस बेचारे के मुँह से निकला — "उफ, अब मैं क्या करूँ?" और वह भी वहाँ से भाग लिया। वहाँ से भाग कर वह अपनी एक

चाची के पास गया जो एक परी थी और उसके पास बहुत तरीके के जादुई पाउडर थे।

उसने जब जा कर अपनी उस चाची को अपना सारा किस्सा सुनाया तो उसने दो जादुई पाउडर मिलाये – एक तो उन सेबों के लिये जिन पर जादू किया गया होता है और दूसरा उन लड़कियों के लिये जिन पर जादू किया गया होता है।

उसने उन दोनों पाउडरों को मिलाया और उस पाउडर को नौकर को दे कर कहा कि वह जा कर उसको सेब के ऊपर छिड़क दे।

नौकर भागा भागा आया और वह पाउडर उसने उस सेब पर छिड़क दिया। सेब टूट कर खुल गया और सेब में से वह लड़की बाहर निकल आयी। पर उसके सारे शरीर पर पट्टियॉ बॅधी थीं और कई जगह प्लास्टर बॅधा था।

राजा घर आया तो वह लड़की पहली बार उससे बोली — "क्या तुम विश्वास करोगे कि तुम्हारी सौतेली मॉ ने मेरे सारे शरीर पर चाकू मारे?

पर तुम्हारे नौकर ने मेरी बड़ी सेवा की जिससे मैं ठीक हो सकी। मैं अठारह साल की हूॅ और एक जादू में थी। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी पत्नी बन सकती हूॅ।"

"अरे यह तुम क्या कहती हो कि मैं पसन्द करूॅ तो? मैं तो कब से तुमसे शादी करना चाहता हूॅ।"

बस फिर क्या था दोनों तरफ से शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं और दोनों की शादी हो गयी।

दोनों महलों में खूब आनन्द मनाया। इस आनन्द मनाने के समय में केवल एक ही आदमी नहीं था – और वह थी राजा की सौतेली मॉ।

6 एक आदमी जो केवल रात को बाहर निकलता था[18]

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसकी तीन सुन्दर बेटियॉ थीं। उसकी तीनों बेटियॉ शादी के लायक थीं।

एक नौजवान ने उसकी तीनों बेटियों में से एक का हाथ शादी के लिये मॉगा। वह नौजवान क्योंकि केवल रात को ही बाहर निकलता था इसलिये लोग उसको शक की निगाहों से देखते थे।

इसी लिये उसकी सबसे बड़ी और बीच वाली बेटियों ने उससे शादी करने से साफ मना कर दिया पर उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी उससे शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

दोनों की शादी रात को ही हुई। जैसे ही वे दोनों अकेले रह गये तो पति ने पत्नी से कहा — "मैं तुमको एक भेद बताना चाहता हूॅ। मेरे ऊपर एक बहुत बुरा जादू पड़ा हुआ है जिससे मैं दिन में कछुआ बन जाता हूॅ और रात में मैं एक आदमी बन जाता हूॅ।

[18] The Man Who Came Out Only at Night – a folktale from Italy from its Riviera de Ponente area, Italy. Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

इस जादू को तोड़ने का केवल एक ही तरीका है। और वह यह कि पहले मैं शादी करूँ, फिर मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर दुनियॉ घूमूँ – रात में एक आदमी तरह और दिन में एक कछुए की तरह।

अगर मैं वापस आऊँ और पाऊँ कि मेरी पत्नी मेरे लिये इस सारा समय वफादार रही है और उसने मेरे लिये सारी मुश्किलों को सहा है तो फिर मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊँगा।"

पत्नी बोली — "मैं आपको आपका जादू तोड़ने के लिये और फिर हमेशा आदमी के रूप में देखने के लिये जो भी आप कहेंगे वही करूँगी।"

इसके बाद पति ने उसको एक हीरा दिया और कहा कि उस हीरे की ताकत से वह जो भी काम होने के लिये कहेगी वही हो जायेगा।

ऐसा कर के वह तो दुनियॉ घूमने निकल पड़ा और उसकी पत्नी शहर में काम खोजने के लिये निकल पड़ी। रास्ते में उसको एक रोता हुआ बच्चा मिला तो उसने उस बच्चे की मॉ से कहा — "लाइये इसको मुझे दे दीजिये मैं इसको चुप करा देती हूँ।"

मॉ बोली — "बेटी तुम वह पहली आदमी हो जिसने मुझसे ऐसा कहा है। आज यह सुबह से ही रो रहा है चुप ही नहीं हो रहा।"

लड़की ने उसके कान में फुसफुसाया — "हीरे की ताकत से यह बच्चा हॅस जाये, नाचे और कूदे।" बस उसका यह कहना था कि बच्चे ने उसी समय से हॅसना, नाचना और कूदना शुरू कर दिया।

बच्चे की मॉ तो अपने बच्चे को हॅसता नाचता देख कर बहुत खुश हो गयी और उस लड़की को बहुत आशीर्वाद दे कर अपने हॅसते खेलते बच्चे को ले कर चली गयी।

वह लड़की और आगे चली तो एक बेकरी[19] की दूकान पर पहुॅची। वहॉ जा कर वह उसकी मालकिन से मिली और बोली — "अगर आप मुझे अपनी बेकरी की दूकान में किसी काम पर रख लेंगी तो आप मुझसे बहुत खुश रहेंगी।"

यह सुन कर उस बेकरी की दूकान की मालकिन ने उसको अपनी दूकान में काम दे दिया और वह वहॉ डबल रोटियॉ बनाने लगी।

जब वह डबल रोटियॉ बनाती तो फुसफुसाते हुए बोलती — "हीरों की ताकत से जब तक मैं यहॉ काम करती हूॅ तब तक सारा शहर केवल इसी बेकरी से डबल रोटी खरीदे।"

[19] Bakery shops normally bake the bread, biscuits, cake, bun etc. Most western households use baked goods in their staple food.

बस उस दिन से उसकी दूकान पर भीड़ लगी रहती और उसको पल भर का समय भी खाली नहीं मिलता। सारे लोग उसी दूकान से अपनी डबल रोटी खरीदते।

उस दूकान पर तीन नौजवान भी डबल रोटी लेने के लिये आते थे। उन तीनों ने उस लड़की को देखा तो वे तीनों ही उससे प्यार करने लगे।

उनमें से एक नौजवान ने एक दिन उससे कहा अगर तुम मुझे अपने साथ एक रात गुजारने दो तो मैं तुमको एक हजार फ्रैंक[20] दूँगा। दूसरे नौजवान ने कहा कि मैं दो हजार फ्रैंक दूँगा और तीसरा नौजवान बोला कि मैं तीन हजार फ्रैंक दूँगा।

लड़की ने तीसरे नौजवान से तीन हजार फ्रैंक लिये और उसको रात को बेकरी की दूकान में बुलाया। जब वह आया तो उससे बोली — "मैं अभी आती हूँ एक मिनट में। ज़रा मैं आटे में खमीर[21] डाल आऊँ। जब तक तुम यहाँ खाली बैठे हो तब तक मेरे लिये यह आटा ही मल दो।"

उस नौजवान ने उसका आटा मलना शुरू किया तो वह तो मलता ही रहा, मलता ही रहा, मलता ही रहा। हीरे की ताकत से वह अपने हाथ आटा मलने से हटा ही नहीं सका और वह अगले दिन सुबह तक आटा ही मलता रहा।

[20] Franc is the currency of France

[21] Translated for the word "Yeast"

सुबह को लड़की बोली — "सो आखिर तुमने अपना आटा मलने का काम खत्म कर ही लिया। मुझे अफसोस है कि तुमको आटा मलने में इतनी देर लग गयी।" और उस समय क्योंकि सुबह हो गयी थी इसलिये उसने उसको वहाँ से वापस भेज दिया।

फिर उसने दो हजार फैंक वाले नौजवान को रात को बुलाया और उससे उसने आग में धौंकनी चलाने के लिये कहा ताकि ओवन[22] की आग बुझ न जाये। वह बेचारा भी हीरे की ताकत से रात भर धौंकनी चलाता रह गया। उसके हाथ उस धौंकनी पर से हट ही नहीं पा रहे थे।

सुबह को वह लड़की कुछ अफसोस दिखाते हुए उससे बोली — "उँह भला यह भी कोई तरीका है किसी से बर्ताव करने का? तुम तो मुझसे यहाँ मिलने आये थे और तुम तो यहाँ रात भर आग फूँकते ही रह गये। मुझे बहुत अफसोस है।"

सुबह हो गयी थी सो उसने उसको भी घर वापस भेज दिया।

अगली रात उस लड़की ने एक हजार फैंक वाले नौजवान को बुलाया। जब वह आ गया तो उसने उससे कहा — "मुझे ज़रा आटे में खमीर मिलाना है तुम ज़रा दूकान का दरवाजा बन्द कर दो।"

[22] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance and most commonly used for cooking.

वह नौजवान दरवाजा बन्द करने गया तो हीरे की ताकत से तो वह दरवाजा ही बन्द करता रह गया। वह दरवाजा रात भर बन्द ही नहीं हुआ।

वह जैसे ही उसको बन्द करने की कोशिश करता वह बार बार खुल जाता था। वह सारी रात दरवाजा बन्द ही नहीं कर सका। जब दिन निकल आया तब कहीं जा कर वह दरवाजा बन्द हुआ।

जब वह दरवाजा बन्द कर के लड़की के पास लौटा तो उसने पूछा — "तुमने ठीक से देख लिया है न कि दरवाजा बन्द हो गया या नहीं?"

नौजवान ने पलट कर देखा कि वाकई दरवाजा बन्द हुआ कि नहीं फिर कुछ सोच कर बोला — "हॉ हो गया।"

लड़की बोली — "तो अब तुम दरवाजा खोल कर बाहर जा सकते हो।"

लड़की के ऐसे बर्ताव से उन तीनों नौजवानों को बहुत गुस्सा आया। वे थाने में उसकी शिकायत करने गये।

उस दिन कुछ स्त्री पुलिस उस स्त्री की दूकान पर आयीं और उस लड़की के बारे में पूछा जिसने यह सब किया था। उन्होंने उस लड़की को पकड़ लिया और उसको थाने ले जाने लगीं।

तभी वह लड़की फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये स्त्रियॉ आपस में एक दूसरे को मारती ही रहें – सुबह सवेरे तक।"

वहॉ पर चार स्त्री पुलिस थीं। उस लड़की के यह फुसफुसाते ही वे चारों आपस में एक दूसरे को कान पर मारने लगीं और फिर सुबह तक मारती ही रहीं।

सुबह को उन सबके कान पिटते पिटते काशीफल की तरह से सूजे पड़े थे फिर भी वे एक दूसरे को मारे जा रही थीं। उनके हाथ ही नहीं रुक पा रहे थे।

जब वे स्त्री पुलिस उस लड़की को पकड़ कर थाने नहीं ला सकीं तो चार आदमी पुलिस उनको देखने के लिये भेजे गये। उस लड़की ने जब उन आदमी पुलिस को आते देखा तो वह फिर फुसफुसायी — "हीरे की ताकत से ये चारों पुलिस वाले मेंढक की तरह से कूदते रहें।"

उनमें से एक औफीसर तो उसी समय दूसरे तीन औफीसरों के सामने गिर पड़ा। दूसरा उसके ऊपर से हो कर थोड़ा आगे की तरफ चला तो तीसरे ने उसकी कमर पर हाथ रखा और उसके ऊपर कूद गया। चौथे ने भी वैसे ही किया और इस तरह से वे बहुत देर तक मेंढक की कूद का खेल[23] खेलते रहे।

इसी समय एक कछुआ वहॉ रेंगता हुआ आ गया। यह उस लड़की का पति था जो अपनी दुनियॉ की यात्रा पूरी कर के वापस आ गया था। जैसे ही उसने अपनी पत्नी को देखा तो वह आदमी

[23] Leap Frog game

बन गया। लड़की की खुशी का वारापार न रहा। वे दोनों फिर पति पत्नी बन कर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

7 एक राजकुमार जिसने मेंढकी से शादी की[24]

इस लोक कथा में एक राजकुमारी को मेंढकी बन जाने का शाप था और वह अपने असली रूप में तभी आ सकती थी जब कोई उससे उसके उसी रूप में शादी करता। अब ऐसा कौन करता यह देखने की बात है।

एक बार एक राजा था जिसके तीन बेटे थे और उसके तीनों बेटे शादी के लायक थे।

जिससे कि उनकी पत्नियॉ चुनने में किसी तरह की झगड़ा न हो इसलिये राजा ने कहा — "तुम लोग अपनी अपनी गुलेलों से जितना दूर पत्थर फेंक सकते हो फेंको और जिसका पत्थर जहॉ पड़ेगा वहीं से तुम्हारी पत्नी चुनी जायेगी।"

सो तीनों लड़कों ने अपनी अपनी गुलेलें उठा लीं और उसमें पत्थर रख कर बहुत ज़ोर से मारा। सबसे बड़े बेटे का पत्थर एक बेकरी[25] की छत पर पड़ा सो उसकी शादी उस दूकान के मालिक की बेटी से तय कर दी गयी।

[24] The Prince Who Married a Frog – a folktale from Italy from its Monferrato area – Adapted from the book, "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[25] Bakery is a place where bread, bun, cake etc are baked.

दूसरे बेटे का पत्थर एक कपड़ा बुनने वाले के घर पर जा कर गिरा सो उसकी शादी उस कपड़ा बुनने वाले की लड़की से तय कर दी गयी। पर सबसे छोटे बेटे का पत्थर एक गड्ढे में गिर पड़ा।

गुलेल चलाने के बाद तुरन्त ही हर बेटा अपनी अपनी पत्नी को अँगूठी पहनाने के लिये दौड़ पड़ा।

सबसे बड़े लड़के की पत्नी बहुत सुन्दर थी। बीच वाले लड़के की पत्नी बहुत गोरी थी। उसके बाल और उसकी खाल दोनों रेशमी थे।

पर सबसे छोटा लड़का अपनी पत्नी को उस गड्ढे में ढूँढता रहा ढूँढता रहा पर एक मेंढकी के अलावा उस गड्ढे में उसको और कुछ मिला ही नहीं।

वे सब अपनी अपनी पत्नियों के बारे में राजा को बताने के लिये घर लौटे तो राजा बोला — "अब जिस किसी की भी पत्नी सबसे अच्छी होगी राजगद्दी उसी को मिलेगी। सो अब उन लड़कियों का इम्तिहान शुरू होता है।"

इतना कह कर उसने अपने तीनों बेटों को कुछ रुई दी और कहा कि वे उसको अपनी होने वाली पत्नियों को दे दें और वे उसको तीन दिन के अन्दर अन्दर कात कर राजा के पास लायेंगी। इससे वह यह देखना चाहता था कि उन तीनों में से कौन सबसे अच्छा धागा कातती थी।

सब बेटे अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास गये और उनको वह रुई दे कर उनसे तीन दिन के अन्दर अन्दर सबसे अच्छा सूत कातने के लिये कहा।

सबसे छोटा बेटा बहुत ही परेशान था कि वह कैसे उस रुई को ले कर अपनी मेंढकी पत्नी के पास जाये और उससे सूत कातने के लिये कहे।

पर फिर भी वह उस गड्ढे के पास गया और अपनी पत्नी को पुकारा — "मेंढकी ओ मेंढकी।"

"मुझे कौन पुकार रहा है?"

लड़का बोला — "मैं तुम्हारा प्यार जो तुमको प्यार नहीं करता।"

"अगर तुम मुझको प्यार नहीं करते तो न करो पर बाद में तुम मुझे प्यार जरूर करोगे जब मैं बहुत सुन्दर हो जाऊँगी।"

वह मेंढकी पानी से कूद कर बाहर आ गयी और बाहर आ कर एक पत्ते पर बैठ गयी।

राजा के बेटे ने उसको अपने पिता की दी हुई रुई देते हुए उससे कहा — "हम तीन भाई हैं। मेरे दोनों भाइयों की शादी तो लड़कियों से होने वाली है और मेरी शादी तुमसे होगी। मेरे पिता ने कहा है कि हममें से जिस किसी की होने वाली पत्नी सबसे होशियार होगी उनका राज्य उसी को मिलेगा।

इम्तिहान के लिये अभी उन्होंने यह रुई दी है और कहा है कि सब लड़कियॉ रुई का सूत कातें। मैं देखना चाहता हूॅ कि कौन सबसे अच्छा सूत कातती है। मैं इसका कता हुआ सूत लेने के लिये तीन दिन बाद आऊॅगा।"

तीन दिन के बाद राजा के दोनों बड़े बेटे अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास उनके काते हुए सूत लेने के लिये गये। बेकरी वाले की लड़की ने बहुत ही सुन्दर सूत काता था और कपड़ा बुनने वाले की लड़की तो इस काम में माहिर थी सो उसका कता हुआ सूत तो रेशम की तरह दिखायी देता था।

पर हमको तो राजा के सबसे छोटे बेटे की चिन्ता है कि उसका क्या हुआ? वह उस गड्ढे के पास गया और पुकारा — "ओ मेंढकी, ओ मेंढकी।"

"मुझे किसने पुकारा?"

"तुम्हारा प्यार जो तुमको प्यार नहीं करता।"

"अगर तुम मुझको प्यार नहीं करते तो न सही। कोई बात नहीं। बाद में तुम करोगे जब मैं बहुत सुन्दर हो जाऊॅगी।"

कह कर वह मेंढकी पानी में से कूद कर बाहर आ कर एक पत्ते पर बैठ गयी। उसके मुॅह में एक अखरोट था।

उसने वह अखरोट अपने पति को दिया और उसको ले जा कर अपने पिता को देने के लिये कहा। उसने यह भी कहा कि वह उनसे कहे कि वह उस अखरोट को तोड़ लें।

वह लड़का उस अखरोट को अपने पिता को देने में हिचकिचा रहा था क्योंकि उसके दोनों भाई बहुत सुन्दर कता हुआ सूत लाये थे।

खैर फिर भी हिम्मत कर के उसने अपना अखरोट अपने पिता को दे दिया। पिता ने जिसने पहले ही अपने दोनों बेटों की पत्नियों के कामों को देख रखा था कुछ शक से उस अखरोट को तोड़ा।

दोनों बड़े भाई भी देख रहे थे कि उनका छोटा भाई यह कैसा सूत कतवा कर लाया है।

पर सब आश्चर्यचकित रह गये जब उस अखरोट में से इतना बढ़िया धागा निकला जितना कि मकड़ी का जाला होता है और इतना सारा निकला कि उस धागे से राजा का सारा कमरा ढक गया।

राजा बोला — "पर इसका कोई ओर छोर तो कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा।" जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले वह धागा खत्म हो गया।

मेंढकी के हाथ का कता धागा इतना बढ़िया होने पर भी पिता को एक मेंढकी को रानी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं सो उसने

एक और इम्तिहान लेने का विचार किया। राजा की शिकारी कुतिया ने तभी तभी तीन बच्चों को जन्म दिया था।

उन तीनों बच्चों को उसने अपने तीनों बेटों को दिया और बोला — "इनको अपनी अपनी होने वाली पत्नियों के पास ले जाओ और उनको दे दो। फिर एक महीने बाद उनके पास जाना और जिसने भी अपने कुत्ते की सबसे अच्छी देखभाल की होगी वही इस राज्य की रानी बनेगी।"

सो उसके तीनों बेटों ने वे कुत्ते के बच्चे लिये और उनको ले जा कर अपनी अपनी होने वाली पत्नियों को दे आये।

एक महीने बाद वे फिर गये तो बेकरी वाले की बेटी का कुत्ता खूब बड़ा और मोटा हो चुका था क्योंकि उसको वहाँ हर तरह की डबल रोटी खाने को मिलती थी।

कपड़ा बुनने वाली का कुत्ता इतना बड़ा और मोटा नहीं हो पाया था क्योंकि उसको उतना खाना नहीं मिल पाया था। वह आधा भूखा सा था।

सबसे छोटा बेटा एक छोटा सा बक्सा लिये चला आ रहा था। राजा ने उस बक्से को खोला तो उसमें से एक बहुत छोटा सा बड़े बड़े बालों वाला कुत्ता कूद पड़ा।

वह छोटा सा कुत्ता बहुत सुन्दर लग रहा था और उसके बालों में से खुशबू आ रही थी। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो कर आगे बढ़ रहा था।

अबकी बार राजा बोला — "इसमें मुझे कोई शक नहीं लगता कि मेरा सबसे छोटा बेटा ही राजा बनेगा और वह मेंढकी रानी बनेगी।"

सो राजा ने अपने तीनों बेटों की शादी एक ही दिन करने का फैसला किया।

दोनों बड़े भाई फूलों और मोतियों की माला से सजायी गयी और चार घोड़ों से खींची गयी गाड़ियों में सवार हो कर अपनी अपनी होने वाली पत्नियों को लाने गये। वहाँ पंखों और जवाहरातों से सजी हुई वे लड़कियाँ उन गाड़ियों में सवार हुईं और शादी के लिये महल चल दीं।

सबसे छोटा लड़का उस गड्ढे के पास गया जहाँ वह मेंढकी एक अंजीर[26] के पत्ते से बनी और चार घोंघों[27] से खींची जा रही गाड़ी में बैठी उसका इन्तजार कर रही थी।

राजकुमार आगे आगे चला और वे घोंघे अंजीर के पत्ते पर मेंढकी को बिठा कर उसके पीछे पीछे चले। थोड़ी थोड़ी दूर पर उस लड़के को रुकना पड़ता था ताकि वे घोंघे उसके साथ तक आ जायें।

[26] Translated for the word "Fig". See its picture above.

[27] Translated for the word "Snail". See its picture above.

इतनी धीरे धीरे चलने की वजह से एक बार तो वह राजकुमार सो ही गया था। और जब उसकी ऑख खुली तो एक सोने की गाड़ी उसके बराबर में आ कर रुकी।

उस गाड़ी को दो सफेद घोड़े खींच रहे थे। उसमें अन्दर मखमल के गद्दे लगे हुए थे और उसमें सूरज से भी ज़्यादा चमकदार एक लड़की बैठी हुई थी। उसने पन्ने जैसे हरे रंग की पोशाक पहनी हुई थी।

उस लड़के ने पूछा — "तुम कौन हो?"

"मैं मेंढकी हूँ, तुम्हारी पत्नी।"

वह तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका कि वही लड़की उसकी मेंढकी थी। उस लड़की ने गहनों का एक बक्सा खोला और उसमें से अंजीर का एक पत्ता निकाला और घोंघों के चार खोल निकाल कर उस लड़के को दिखाये।

फिर वह उस लड़के से बोली — "मैं एक राजकुमारी थी जिसको एक परी ने जादू से एक मेंढकी बना दिया था। मेरे आदमी के रूप में आने का केवल एक ही तरीका था कि कोई राजकुमार मुझसे उसी शक्ल में शादी करने को तैयार हो जाये जिसमें मैं थी।

तुम मुझसे शादी करने को तैयार हो गये तो मैं अपने असली रूप में आ गयी।"

दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई से जल रहे थे। जब राजा को इस बात का पता चला तो वह अपने दोनों बड़े बेटों से बोला जिसने भी गलत पत्नी चुनी है वह राज्य करने के लायक नहीं है।

इसलिये उसने अपने सबसे छोटे बेटे और उसकी मेंढकी पत्नी को उस राज्य का राजा और रानी बना दिया।

8 तीन कुत्ते[28]

इस लोक कथा में तीन आदमियों को शाप दे कर कुत्ता बना दिया जाता है पर उनके कुत्ते से आदमी बनने की शर्त भी कुछ अजीब है। लो पढ़ो यह लोक कथा और जानो कि वह शर्त क्या थी और वह कैसे पूरी हुई।

एक बार एक बूढ़ा किसान था जिसके दो बच्चे थे, एक बेटा और एक बेटी।

जब उसके मरने का समय आया तो उसने अपने दोनों बच्चों को अपने पास बुलाया और बोला — "मेरे बच्चों, मैं अब मरने वाला हूँ और मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये कुछ भी नहीं है सिवाय तीन छोटी भेड़ों के जो बाड़े में हैं। तुम सब मिल कर रहना तो तुम कभी भूखे नहीं रहोगे।"

इतना कह कर वह बूढ़ा किसान मर गया। उसके मरने के बाद दोनों भाई बहिन साथ साथ रहते रहे। लड़का भेड़ चरा लाता था और लड़की घर में रह कर सूत कातती थी और खाना बनाती थी।

एक दिन जब लड़का भेड़ों को चराने के लिये जंगल गया हुआ था तो उसको एक छोटा आदमी मिला जिसके पास तीन कुत्ते थे।

वह बोला — "गुड डे[29] मेरे बच्चे।"

---

[28] The Three Dogs. A folktale from Italy from its Romogna area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[29] A normal greeting among the western people in the day time

लड़का बोल — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "तुम्हारी भेड़ें कितनी अच्छी हैं।

लड़का बोला — "आपके कुत्ते भी बहुत अच्छे हैं।"

"क्या तुम एक कुत्ता खरीदोगे?"

"कितने का है?"

"तुम मुझे अपनी एक भेड़ दे दो तो मैं तुमको अपना एक कुत्ता मुफ्त दे दूँगा।"

"पर मेरी बहिन क्या कहेगी?"

"उसको क्या कहना है। तुमको तो सच में एक कुत्ते की जरूरत है जो तुम्हारी भेड़ों की रखवाली करे।"

लड़का अपने आप ही कुछ बुड़बुड़ाया फिर उसने उस आदमी को अपनी एक भेड़ दे दी और उससे उसका एक कुत्ता ले लिया। उसने उस आदमी से उसके कुत्ते का नाम पूछा तो उस छोटे आदमी ने बताया कि उसका नाम "कश आयरन"[30] था।

जब घर जाने का समय आया तो वह लड़का कुछ बेचैन हो गया। उसको लगा कि उसकी बहिन उसको डॉटेगी।

और वाकई में जब वह लड़की बाड़े में भेड़ों का दूध निकालने गयी तो वहॉ उसको केवल दो भेड़ें और एक कुत्ता दिखायी दिया। वह अपने भाई पर चिल्लायी और उसने उसकी पिटायी भी की।

[30] Crush Iron – who can crush the iron

उसने उससे पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि हमारी एक भेड़ कहाँ है और यह कुत्ता हमारे किस काम का है? अगर कल तक हमारी तीनों भेड़ वापस नहीं आयीं तो तुम्हारी खैर नहीं।"

परन्तु उस लड़के को अभी भी लग रहा था कि उसको अपनी भेड़ों की देखभाल के लिये एक कुत्ते की जरूरत है।

अगली सुबह वह लड़का अपनी भेड़ चराने के लिये फिर उसी जगह गया तो उसे फिर से वही छोटा आदमी मिल गया। इस बार उसके पास एक भेड़ और दो कुत्ते थे।

वह आदमी बोला — "गुड डे, मेरे बच्चे।"

लड़का बोला — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "मेरी भेड़ बहुत अकेली है।"

लड़का बोला — "मेरा कुत्ता भी।"

आदमी बोला — "तो तुम मुझे दूसरी भेड़ दे दो और मैं तुमको दूसरा कुत्ता दे देता हूँ।"

लड़का बोला — "ओह, पता है कल मेरी बहिन मुझे एक भेड़ तुम्हें देने के लिये मारने वाली थी। ज़रा सोचो तो अगर मैंने तुमको दूसरी भेड़ भी दे दी तो वह मेरा क्या हाल करेगी।"

आदमी बोला — "देखो एक कुत्ता अकेला ठीक नहीं है। अगर दो भेड़िये आ गये तो तुम क्या करोगे?"

यह सुन कर लड़के ने दूसरी भेड़ का भी सौदा कर लिया। उसने अपनी एक भेड़ उसको दे कर उससे उसका दूसरा कुत्ता ले लिया।

फिर उसने उस आदमी से पूछा — "इस कुत्ते का क्या नाम है?"

आदमी बोला — "च्यू चेन्स[31]।"

जब वह लड़का शाम को एक भेड़ और दो कुत्तों के साथ घर लौटा तो उसकी बहिन ने पूछा — "क्या तुम तीनों भेड़ें वापस ले आये?" पर उसको पता ही नहीं था कि वह उससे क्या कहे।

फिर भी वह बोला — "हॉ, पर तुमको अनाजघर में आने की कोई जरूरत नहीं है मैं उनका दूध अपने आप निकाल लूँगा।"

पर लड़की ने उन भेड़ों को अपने आप देखने के लिये ज़ोर दिया और इसका नतीजा यह हुआ कि भाई बिना खाना खाये ही सो गया।

वह बोली — "मैं तुम्हारी जान ले लूँगी अगर कल शाम तक मेरी तीनों भेड़ें यहॉ वापस नहीं आयीं तो।"

अगले दिन वह जब जंगल में अपने जानवर चरा रहा था तो वह छोटा आदमी उसको अपनी दोनों भेड़ों और एक कुत्ते के साथ फिर वहीं मिल गया।

वह आदमी बोला — "गुड डे, मेरे बच्चे।"

[31] Chew Chains – who can chew iron chains

लड़का बोला — "गुड डे जनाब।"

आदमी बोला — "अब मेरा यह कुत्ता अकेलेपन से मरा जा रहा है।"

लड़का बोला — "और यह मेरी आखिरी भेड़ भी।"

आदमी बोला — "तो तुम अपनी यह भेड़ मुझे दे दो और मेरा यह कुत्ता तुम ले लो।"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, ऐसी बात की तो तुम मुझे सलाह भी मत देना।"

आदमी बोला — "क्यों? तम्हारे पास दो कुत्ते हैं तो तुमको तीसरा कुत्ता क्यों नहीं चाहिये? इस तरह से तुम तीन बहुत बढ़िया कुत्तों के मालिक हो जाओगे।"

"इस कुत्ते का नाम क्या है?"

"कैश वौल[32]।"

"कश आयरन, च्यू चेन्स, कैश वौल। आओ मेरे साथ आओ।"

जब रात हुई तो उस लड़के की अपनी बहिन के पास घर जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उसने सोचा मैं बाहर ही कहीं सो जाता हूँ। सो वह अपने तीनों कुत्तों को अपने पीछे लिये लिये चल दिया।

[32] Crash wall – who can break the wall

अभी वह उनको लिये हुए कुछ ही दूर गया था कि बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी। रात हो चुकी थी और उसको कुछ पता ही नहीं चल रहा था कि वह कहॉ जाये।

उसी समय उस घने जंगल के बीच में उसको एक बहुत सुन्दर महल दिखायी दे गया जिसमें चारों तरफ रोशनी हो रही थी और उसके चारों तरफ चहारदीवारी खड़ी थी।

उसने जा कर महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने दरवाजा नहीं खोला। उसने पुकारा भी पर किसी ने कोई जवाब भी नहीं दिया। तब उसने अपने कैश वौल कुत्ते को पुकारा — "कैश वौल मेरी सहायता करो।"

उसके मुॅह से शब्द निकले भी नहीं थे कि कैश वौल ने अपने मजबूत पंजों से उस महल की चहारदीवारी में एक छेद बना दिया। वह लड़का और उसके तीनों कुत्ते सब उस छेद में से महल की चहारदीवारी में दाखिल हो गये।

पर उनके सामने ही एक मोटा सा लोहे का दरवाजा था। वह लड़का बोला — "कश आयरन, अब तुम्हारी बारी है।" कश आयरन ने तुरन्त ही दो बार के काटने में उस दरवाजे को तोड़ डाला।

अन्दर पहुॅच कर उस लड़के ने देखा कि महल का दरवाजा तो जंजीरों से बॅधा हुआ है। लड़के ने पुकारा — "च्यू चेन।" और

एक ही बार में उस कुत्ते ने वह जंजीरें तोड़ डालीं और दरवाजा खुल गया।

कुत्ते अन्दर घुस गये और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गये। लड़का उनके पीछे पीछे था। उस महल में कोई भी दिखायी नहीं दे रहा था। सारा महल खाली पड़ा था।

आग जलाने की जगह आग जल रही थी और पास में ही एक बड़ी सी मेज पर बहुत सारा खाना लगा हुआ था। वह तुरन्त ही खाना खाने बैठ गया। उस मेज के नीचे सूप के तीन कटोरे कुत्तों के लिये रखे हुए थे। कुत्ते उन सूप के कटोरों में से सूप पीने बैठ गये।

जब उन सबने अपना अपना खाना खा लिया तो वह दूसरे कमरे में घुसा। वहॉ उसके रात के सोने के लिये एक बिस्तर लगा हुआ था और तीन बिस्तर उसके कुत्तों के लिये लगे थे। सो वे चारों वहॉ सो गये।

सुबह सवेरे जब वह उठा तो शिकार के लिये वहॉ एक बन्दूक और एक घोड़ा भी तैयार था। उनको ले कर वह शिकार के लिये चला गया।

जब वह दोपहर को घर वापस आया तो फिर से उस मेज पर खाना सजा हुआ था, बिस्तर लगा हुआ था और सारा घर साफ और अच्छे तरीके से लगा हुआ था।

यह दो दिन तक लगातार चलता रहा पर उसको कहीं भी कोई भी दिखायी नहीं दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह वहॉ छुट्टियॉ बिताने आया हो।

फिर उसको अपनी बहिन की याद आयी। उसको यह अन्दाजा ही नहीं हुआ कि जब वह घर नहीं पहुँचा होगा तो उस बेचारी को कितनी परेशानी हुई होगी पर उसने सोचा कि अब वह उसको रहने के लिये यहॉ ले आयेगा।

अब तो मैं खूब अमीर हो गया हूँ तो अब तो मुझे वह घर में भेड़ें न लाने के लिये सपने में भी डॉटने की नहीं सोचेगी।

अगले दिन उसने अपने कुत्तों को बुलाया, एक भले आदमी के कपड़े पहन कर घोड़े पर चढ़ा और अपनी बहिन के पास चल दिया।

उसकी बहिन घर के बाहर बैठी सूत कात रही थी। उसने दूर से एक आदमी को आते देखा तो सोचा — "यह सुन्दर सा नौजवान कौन हो सकता है जो मेरे घर की तरफ चला आ रहा है।"

पर जब उसने अपने भाई को पहचाना जो अभी भी तीन भेड़ों की बजाय तीन कुत्तों के साथ आ रहा था तो उसने उसको फिर डॉट लगायी।

उसका भाई बोला — "रुको रुको। तुम मेरे ऊपर चिल्ला क्यों रही हो। अब तो मैं एक बहुत ही भला आदमी बन गया हूँ और

अब मैं तुमको अपने साथ रहने के लिये यहॉ से ले जाने के लिये आया हूॅ। अब हमको उन भेड़ों की क्या जरूरत है?"

कह कर उसने अपनी बहिन को अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल वापस आया जहॉ वह रानी बन गयी। वहॉ उसकी छोटी से छोटी इच्छा भी तुरन्त ही पूरी हो जाती।

पर वह अभी भी हमेशा उन कुत्तों से नफरत करती और जब भी उसका भाई घर आता वह उससे उनकी शिकायत करती।

एक दिन जब उसका भाई अपने तीनों कुत्तों के साथ शिकार पर गया हुआ था तो वह बागीचे में घूमने चली गयी। वहॉ उसने बागीचे के आखीर में एक पेड़ पर एक बहत ही सुन्दर सन्तरा लगा देखा।

वह उसको तोड़ने गयी तो जैसे ही उसने उसको शाख से तोड़ा तो एक राक्षस उसको खाने को दौड़ा।

वह यह कहते हुए एकदम से रो पड़ी कि उस महल का असली मालिक तो उसका बड़ा भाई था वह नहीं। और अगर उस राक्षस को किसी को खाना ही है तो उसे उसके भाई को खाना चाहिये उसे नहीं।

वह राक्षस बोला कि वह उसके भाई को नहीं खा सकता था क्योंकि वह हमेशा उन तीन कुत्तों को अपने साथ रखता है।

लड़की ने कहा कि अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये वह उसके लिये अपने भाई के मारने का इन्तजाम कर देगी अगर वह उसको यह बता दे कि उसको करना क्या है।

राक्षस बोला — "तुम उसके कुत्तों को बागीचे की दीवार के बाहर जंजीर से बॅधवा दो फिर मैं देख लूॅगा।" लड़की ने यह करने का वायदा किया और उस राक्षस ने उसको छोड़ दिया।

जब वह लड़का घर आया तो उसकी बहिन ने उससे फिर से कुत्तों की शिकायतें करनी शुरू कीं। उसने कहा कि उसको खाने के समय वे कुत्ते नहीं चाहिये क्योंकि उनमें बदबू आती थी।

उसका भाई हमेशा उसकी बात मानता था सो वह बिना किसी हील हुज्जत के उन तीनों कुत्तों को बाहर ले गया और उसी तरह से उनको बॉध दिया जैसे उसकी बहिन ने उससे बॉधने के लिये कहा था।

उसके बाद उसने अपने भाई को उस बागीचे के आखीर में लगे पेड़ से सन्तरा तोड़ने के लिये कहा। वह वहॉ गया। पर वह भी जब वह सन्तरा तोड़ रहा था तो वहॉ से वह राक्षस निकल पड़ा।

उसको पता चल गया कि उसकी बहिन ने उसको धोखा दिया है सो वह चिल्लाया — "क्रश आयरन, च्यू चेन्स, क्रैश वौल।"

यह सुनते ही च्यू चेन्स ने जंजीर तोड़ दी, क्रश आयरन ने दरवाजे की लोहे की सलाखें तोड़ दीं और क्रैश वौल ने दीवार तोड़ दी और तीनों ने मिल कर उस राक्षस के टुकड़े टकड़े कर दिये।

वह लड़का अपनी बहिन के पास लौटा और बोला — "तुम क्या मेरे बारे में यही सोचती हो? क्या तुम यह चाहती हो कि वह राक्षस मुझे खा ले? मैं अब तुम्हारे साथ एक मिनट भी और नहीं रह सकता। मैं जा रहा हूँ।" कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और वहाँ से चला गया। उसके पीछे उसके कुत्ते भी चले गये।

चलते चलते वह एक राजा के राज्य में आया। उस राजा के एक अकेली बेटी थी जिसको एक राक्षस खाने वाला था। वह राजा के पास गया और शादी के लिये उसकी बेटी का हाथ माँगा।

राजा बोला — "मैं तुमको अपनी बेटी नहीं दे सकता क्योंकि उसको एक बहुत ही भयानक जंगली जानवर खाने वाला है। पर हाँ अगर तुम उसको उससे आजाद कर दो तो यकीनन वह तुम्हारी हो जायेगी।"

"बहुत ठीक है राजा साहब। आप यह सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दें। मैं देखता हूँ।"

उसने उस राक्षस को ढूँढा और उसके कुत्तों ने उसको फाड़ कर खा डाला। जब वह राक्षस को मार कर लौटा तो राजा ने अपनी बेटी की शादी उसके साथ पक्की कर दी।

जब शादी का दिन आया तो दुलहे ने अपनी बहिन के पुराने बर्ताव को भूल कर उसको भी अपनी शादी में बुला भेजा पर उसकी बहिन की शिकायतें अभी भी उतनी ही ज़ोर पर थीं जितनी पहले थीं।

उसकी बहिन ने शादी के बाद यह घोषणा की — "आज की रात अपने भाई का बिस्तर मैं सजाऊँगी।"

इसको बहिन का प्यार समझ कर सभी लोग उसकी इस बात को मान गये कि उसी को अपने भाई का बिस्तर बनाना भी चाहिये।

लेकिन उसने किया क्या? उसने दूल्हे के बिस्तर की चादर के नीचे एक तेज़ आरी छिपा दी। उस रात जब उसका भाई उस पर लेटा तो उसके दो टुकड़े हो गये।

रोने चिल्लाने के बीच उसको चर्च ले जाया गया। तीनों कुत्ते उसके ताबूत के पीछे पीछे चल रहे थे।

बाद में चर्च का दरवाजा बन्द कर दिया गया और उन कुत्तों को वहीं चर्च के अन्दर उस ताबूत के पहरे पर छोड़ दिया गया – एक को उसके दॉयी तरफ, एक को उसके बॉयी तरफ और एक को उसके सिर की तरफ।

जब कुत्तों ने देखा कि सब लोग चले गये तो उनमें से एक कुत्ता बोला — "मैं जाता हूँ और उसको ले कर आता हूँ।"

दूसरा कुत्ता बोला — "मैं उसको उठाऊँगा।"

और तीसरा कुत्ता बोला — "मैं उसको लगाऊँगा।"

उनमें से दो कुत्ते चले गये और मरहम की एक बोतल ले कर लौटे।

उस कुत्ते ने जो पहरे के लिये पीछे रह गया था उस लड़के के घावों को मरहम से चिकना किया और वह लड़का फिर से ज़िन्दा हो गया। राजा और राजकुमारी उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए।

राजा ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे पता लगायें कि वह आरी उसके बिस्तर में किसने छिपायी थी। जब यह पता चला कि उसे उसकी बहिन ने ही वह आरी उसके बिस्तर में छिपायी थी तो उसको मौत की सजा दे दी गयी।

उधर उस लड़के की राजा की लड़की से खुशी खुशी शादी हो गयी। यह खुशी इसलिये भी ज़्यादा थी क्योंकि राजा अब बहुत बूढ़ा हो चला था। उसने अपना राज्य अपने दामाद[33] को दे दिया।

पर एक बात उस लड़के की खुशी को काटती रही और वह थी कि उसको ज़िन्दा करने के बाद से उसके तीनों कुत्ते कहीं गायब हो गये थे। उनका उसके राज्य में कहीं पता नहीं था। वह बेचारा उनके लिये बहुत रोया पर क्या करता। उसको सब्र करना पड़ा।

एक सुबह उसका एक दूत एक खबर ले कर आया कि उसके राज्य में तीन जहाजों ने लंगर डाला है। उन जहाजों पर तीन बड़े आदमी हैं जो उसको अपनी पुरानी दोस्ती की याद दिलाना चाहते हैं।

[33] Son-in-law

वह नौजवान राजा मुस्कुराया क्योंकि वह तो हमेशा से ही एक सादा से गॉव का गरीब लड़का रहा था। वह तो किसी बहुत बड़े आदमी को जानता ही नहीं था फिर ये कौन तीन बड़े आदमी उससे पुरानी दोस्ती को याद दिलाने के लिये कह रहे हैं।

पर फिर भी वह अपने दूत के साथ उन लोगों से मिलने के लिये गया जो अपने आपको उसका दोस्त कहते थे। वहॉ उसको दो राजा और एक बादशाह मिला जो उससे बड़े तपाक से मिले।

उनमें से बादशाह बोला — "क्यों? तुमने हमको पहचाना नहीं?"

वह लड़का बोला — "शायद आप गलती कर रहे हैं। मैं तो कभी आपसे मिला भी नहीं।"

बादशाह मुस्कुराते हुए बोला — "हमको नहीं पता था कि तुम अपने तीनों वफादार कुत्तों को इतनी जल्दी भूल जाओगे।"

"क्या? कश आयरन, च्यू चेन्स और कैश वौल? इस रूप में?"

तब बादशाह ने उसको बताया कि एक जादूगर ने उन तीनों को कुत्तों के रूप में बदल दिया था और हम तब तक अपने असली रूप में नहीं आ सकते थे जब तक कि उस गॉव का कोई लड़का राज गद्दी पर न बैठ जाये।

जैसे हमने तुम्हारी इस राज गद्दी पर बैठने में सहायता की उसी तरह से तुमने भी हमारी उस शाप से छूटने में सहायता की। आज से

हम पक्के दोस्त हैं। चाहे कुछ भी हो जाये पर तुम इन दोनों राजाओं और इस बादशाह पर पूरा भरोसा कर सकते हो।

वे लोग उस शहर में आनन्द मनाते हुए कुछ दिन तक रहे। जब उनके जाने का समय आया तो वे लोग एक दूसरे के लिये शुभ कामना करते हुए अलग हो गये। उसके बाद वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

9 सॉप बादशाह[34]

इस लोक कथा में एक रानी को इच्छा प्रगट करने पर सॉप पैदा हुआ। लेकिन फिर क्या हुआ?

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। रानी रोज प्रार्थना करती, बहुत सारे उपवास रखती पर उसको कोई बच्चा नहीं हुआ।

एक दिन वह एक खेत में घूम रही थी। वहॉ उसने कई किस्म के बहुत सारे जानवर देखे – छिपकलियॉ, चिड़ियें, सॉप। सब अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे थे।

वह सोच रही थी — "देखो ये सारे जानवर अपने अपने बच्चों के साथ घूम रहे हैं और मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

तभी एक सॉप अपने बच्चों के साथ उसके पास से गुजरा तो रानी के मुॅह से निकला — "काश मेरे एक सॉप का बच्चा ही हो जाये तो मैं तो एक सॉप के बच्चे से ही सन्तुष्ट हो जाऊॅगी।"

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसके ऐसा बोलते ही उसको बच्चे की आशा हो गयी। सारे राज्य के लोग बहुत खुश हुए। पर जब बच्चे के पैदा होने का दिन आया तो रानी ने एक सॉप को ही जन्म दिया।

[34] Serpent King - a folktale from Italy from its Calabria area. Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

यह देख कर सबकी बोलती बन्द हो गयी। पर रानी को अपनी कही बात याद आ गयी। यह सोचते हुए कि उसकी प्रार्थना का उसको जवाब मिल गया वह अपने सॉप बच्चे को बहुत प्यार करने लगी और उसको पा कर इतनी खुश हुई जैसे कि वह उसका बेटा ही हो।

उसने उसको एक लोहे के पिंजरे में रख दिया और उसको वही खिलाया जो सॉप खाते थे – सूप और मॉस, दोपहर को और शाम को। वह सॉप खाता भी खूब था – दो के बराबर और दिन ब दिन बड़ा हो रहा था।

जब वह सॉप बहुत बड़ा हो गया तो एक दिन जब उसकी नौकरानी उसके लिये उसका बिस्तर ठीक करने आयी तो उसने उससे कहा — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

वह नौकरानी तो बहुत डर गयी और अब वह उसके पिंजरे के पास भी नहीं जाना चाहती थी।

पर रानी ने उसको सॉप राजकुमार के लिये खाना ले जाने के लिये कहा तो वह बेचारी डरती डरती उसके लिये खाना ले कर आयी तो सॉप ने अपनी बात फिर दोहरायी — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो।"

नौकरानी ने जा कर यह सब रानी से कहा तो रानी बोली — "अब हम क्या करें?"

उसने अपने एक किसान को बुलवाया और उससे कहा — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

वह किसान रानी को मना तो नहीं कर सकता था सो वह बेचारा राजी हो गया और अपनी बेटी को रानी के पास ले आया। सॉप और उस किसान की बेटी की शादी धूमधाम से हो गयी। सॉप दावत की मेज पर भी बैठा। शाम को दोनों अपने कमरे में सोने चले गये।

रात को सॉप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा — "क्या समय है?"

उस समय सुबह के चार बजे थे। पत्नी ने जवाब दिया — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं, अपना हल उठाते हैं और खेतों को जाते हैं।"

सॉप बोला — "तो तुम किसान की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर काट लिया और उसको मार दिया।

अगली सुबह जब नौकरानी सुबह का नाश्ता ले कर आयी तो उसने देखा कि बहू तो मरी पड़ी है।

वह सॉप फिर बोला — "मेरे प्यारे पिता से कहना कि अब मुझे एक ऐसी पत्नी की जरूरत है जो सुन्दर हो और अमीर हो। हॉ ध्यान रखना सुन्दर हो और अमीर भी।"

अबकी बार रानी ने एक चमार को बुलाया जो वहीं सड़क के उस पार रहता था। उसके भी एक बेटी थी। रानी ने उससे भी वही कहा जो उसने किसान से कहा था — "तुम जो कहोगे मैं तुमको वही दूँगी अगर तुम अपनी बेटी मुझे ला दो तो। मैं उसकी शादी अपने बेटे से करना चाहती हूँ।"

चमार जब राजी हो गया तो सॉप राजकुमार की शादी उसकी बेटी के साथ धूमधाम से की गयी। रात को सॉप ने अपनी पत्नी को जगाया और उससे पूछा कि उस समय क्या समय था।

उसकी पत्नी बोली — "यह वही समय है जब मेरे पिता सुबह उठते हैं और अपनी काम की जगह जा कर हथौड़ी मारते हैं।"

सॉप बोला — "तो तुम चमार की बेटी हो।" कह कर उसने उसके गले पर भी काट लिया और वह भी मर गयी।

अगली बार रानी ने एक बादशाह की लड़की से उसकी शादी करने के लिये कहा। वह बादशाह अपनी बेटी की शादी एक सॉप से नहीं करना चाहता था सो उसने इस बारे में अपनी पत्नी से भी सलाह की।

इत्तफाक से उसकी पत्नी उस लड़की की सौतेली मॉ थी जो उससे छुटकारा पाना चाहती थी सो उसने बादशाह को कह सुन कर

उस लड़की की शादी उस सॉप राजकुमार से करने के लिये राजी कर लिया।

वह लड़की बेचारी और तो कुछ कर नहीं सकी सो वह अपनी मॉ की कब्र पर गयी और रो कर उससे पूछा — "मैं क्या करूँ मॉ? मेरी सौतेली मॉ मेरी शादी एक सॉप से कर रही है।"

उसकी मॉ ने कब्र में से जवाब दिया — "तुम उस सॉप राजकुमार से शादी कर लो मेरी बेटी। पर अपनी शादी के दिन तुम एक के ऊपर एक सात पोशाक पहनना।

जब तुम सोने जाओ तो कह देना कि तुमको कोई नौकरानी नहीं चाहिये और तुम खुद ही अपने कपड़े उतार लोगी।

जब तुम उस सॉप के साथ अकेली रह जाओ तो उस सॉप राजकुमार से कहना कि एक पोशाक तुम अपनी उतारोगी और एक खाल वह अपनी उतारेगा।

फिर पहले तुम अपनी पहली पोशाक उतारना और फिर वह अपनी पहली खाल उतारेगा। तुम फिर वही कहना कि एक पोशाक मैं अपनी उतारती हूँ और एक खाल तुम अपनी उतारो। इस तरह से एक एक कर के तुम दोनों अपने अपने कपड़े उतारते रहना।"

मॉ के कहने पर उस लड़की ने उस सॉप राजकुमार से शादी कर ली और उसने वैसा ही किया जैसा कि उसकी मॉ ने उससे करने के लिये कहा था। वह हर बार जब अपनी एक पोशाक उतारती थी तब सॉप भी अपनी एक खाल उतारता था।

जैसे ही उस सॉप राजकुमार ने अपनी सातवीं खाल उतारी तो वहॉ तो दुनियॉ का सबसे सुन्दर राजकुमार खड़ा था। उस राजकुमारी ने भी अपनी सातवीं पोशाक उतारी और फिर वे सोने चले गये।

सुबह के दो बजे दुलहे ने पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह तो वह समय है जब मेरे पिता थियेटर से वापस घर लौटते हैं।"

कुछ देर बाद उसने फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता रात का खाना खाते हैं।"

जब दिन निकल आया तो उसने एक बार फिर पूछा — "इस समय क्या बजा है?"

पत्नी बोली — "यह वह समय है जब मेरे पिता को कौफ़ी चाहिये।"

यह सुन कर उस छोटे सॉप राजा ने उसको चूम लिया और बोला — "तुम मेरी सच्ची पत्नी हो। पर तुम यह बात किसी और को मत बताना कि मैं रात को आदमी बन जाता हूँ। और अगर तुमने ऐसा किया तो तुम मुझको खो दोगी।"

और उसके बाद वह फिर सॉप में बदल गया।

एक रात सॉप ने अपनी पत्नी से कहा — "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं दिन में भी आदमी के रूप में रहूँ तो तुम वही करो जो मैं कहता हूँ।"

पत्नी बोली — "यकीनन मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे।"

सॉप बोला — "दरबार में रोज रात को नाच गाना होता है। तुम वहॉ जाओ। हर एक तुमको वहॉ नाच के लिये बुलायेगा पर तुम किसी के साथ नहीं नाचोगी।

जब तुम एक नाइट[35] को देखो जो लाल कपड़े पहने हो तब तुम अपनी जगह से उठना और केवल उसी के साथ नाचना। वह नाइट मैं होऊँगा।"

समय हुआ और दरबार में सब इकट्ठा होने लगे। राजकुमारी भी उस कमरे में आयी और आ कर एक जगह बैठ गयी।

उसको देख कर तुरन्त ही कई राजकुमार और कुलीन लोगों ने उसको नाच के लिये बुलाया तो उसने जवाब दिया कि वह वहीं ठीक थी और वहीं से केवल नाच देख कर ही खुश थी सो वह वहॉ से नहीं उठी और उनमें से किसी के साथ नहीं नाची।

राजा और रानी को उसका यह बर्ताव कुछ अच्छा नहीं लगा पर उन्होंने यह सोच लिया कि शायद वह अपने पति की इज़्ज़त की वजह से उनके साथ नाचना पसन्द नहीं कर रही थी।

[35] Knight – a certain status in the European kingdoms

अब क्योंकि उसका पति नाच में आ नहीं सकता था इसलिये उन्होंने उसको कुछ नहीं कहा।

अचानक एक नाइट लाल पोशाक में उस कमरे में घुसा। उसी समय वह राजकुमारी अपनी जगह से उठी और उसने उसके साथ नाचना शुरू कर दिया और वह सारी शाम उसी के साथ नाचती रही।

नाच खत्म हो गया और राजा और रानी जब अपनी बहू के साथ अकले रह गये तो उन्होंने उसके बाल पकड़े और बोले — "इसका क्या मतलब होता है कि तुमने हर एक को तो नाचने के लिये मना कर दिया और उस अजनबी के साथ सारी शाम नाचती रहीं। यह तो हमारा बहुत बड़ा अपमान था। हम लोगों का इतना बड़ा अपमान करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

पर वह लड़की कुछ नहीं बोली। यह सब कह सुन कर वे वहॉ से चले गये।

उनके जाने के बाद राजकुमारी ने अपने सॉप पति को बताया कि किस तरह से उसके माता पिता ने उसका अपमान किया था।

सॉप बोला — "तुम उनकी बातों पर ध्यान मत दो। तुमको यह सब तीन रात तक लगातार सहना पड़ेगा। और तीसरी रात के आखीर में मैं हमेशा के लिये आदमी बन जाऊॅगा।

कल रात में काले कपड़े पहन कर आऊँगा। और तुम बस मेरे ही साथ नाचना। अगर वे तुमको इस बात के लिये मारें भी तो उसको मेरे लिये सह लेना।"

अगली शाम राजकुमारी ने फिर से सबको नाच के लिये मना कर दिया पर जब एक नाइट काले रंग की पोशाक पहन कर आया तो वह उसके साथ सारी शाम नाचती रही।

उस दिन राजा और रानी ने उससे कहा — "क्या तुम हर रात इसी तरह से हमारा अपमान करती रहोगी? तो या तो जो हम कहते हैं वह करो वरना..." यह कह कर उन्होंने एक डंडी उठायी और उसको उस डंडी से बहुत मारा।

उस रात उसका सारा शरीर बहुत दर्द कर रहा था। उसने रोते हुए अपने पति को सब कुछ बताया तो उसका पति बोला — "प्रिये बस एक शाम और। कल मैं साधु के वेश में आऊँगा।"

अगली तीसरी और आखिरी रात भी फिर उसने सब लोगों को नाच के लिये मना कर दिया पर जब वह साधु आया तो उसके साथ वह सारी शाम नाचती रही।

जैसे ही शाम का नाच खत्म हुआ तो वहीं उसी समय सबके सामने राजा और रानी ने एक डंडी उठायी और राजकुमारी और उस साधु को उससे मारना शुरू कर दिया।

साधु ने उस मार से बचने की बहुत कोशिश की पर नहीं बच पाया सो वह एक बहुत बड़ी चिड़िया बन गया और खिड़की के शीशे तोड़ कर बाहर उड़ गया।

राजकुमारी चिल्लायी — "अब देखो ज़रा कि आप लोगों ने क्या किया है। क्या आपको मालूम है वह आपका बेटा था।"

जब उन्होंने यह सुना कि यह सब उनके बेटे के ऊपर से जादू उतारने के लिये किया जा रहा था जिससे कि वह हमेशा के लिये आदमी के रूप में आ जाता तो वे दोनों बेचारे बहुत परेशान हुए पर अब वे कर ही क्या सकते थे।

उन्होंने अपनी बहू को गले से लगा लिया और उससे बहुत माफी मॉगी। पर राजकुमारी ने जवाब दिया — "अब हमारे पास समय नहीं है। मुझे उनके पीछे पीछे जाना है।"

उसने तुरन्त ही पैसों के दो थैले उठाये और उसी दिशा में चल दी जिधर वह चिड़िया उड़ कर गयी थी। बीच में वह एक दूकान वाले से मिली जो अपनी दूकान के टूटे शीशे पर रो रहा था।

उसने उससे पूछा — "जनाब, क्या बात है आप क्यों रो रहे हैं?"

वह बोला — "एक चिड़िया अभी अभी यहॉ से उड़ कर गयी है जिसने मेरी यह सारी दूकान तोड़ दी है।"

राजकुमारी ने पूछा — "और इस शीशे की क्या कीमत होगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी?"

"मेरे मालिक ने मुझे बताया कि उसकी कीमत **50** काउन[36] के करीब होगी।"

राजकुमारी ने पैसों का एक थैला खोला उसमें से **50** काउन निकाल कर उस दूकान वाले को दिये और उससे पूछा कि वह चिड़िया किधर की तरफ गयी थी।

दूकान वाले ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा — "उस तरफ, बिल्कुल सीधी।"

राजकुमारी उधर ही चल दी। कुछ दूर चलने के बाद वह एक सुनार की दूकान पर आयी। उस दूकान का मालिक तो वहॉ था नहीं पर उसके नौकर चाकर उस दूकान पर थे और रो रहे थे।

उसने उनमें से एक नौकर से पूछा — "ओ नौजवान, क्या बात है आप लोग क्यों रो रहे हैं?"

वह बोला — "एक चिड़िया अभी अभी यहॉ से उड़ कर गयी है जिसने हमारी यह सारी दूकान तोड़ दी है। अब हमारा मालिक यहॉ आयेगा तो हमको तो वह पीट पीट कर मार ही देगा।"

"इन सब सोने की चीज़ों की क्या कीमत होगी?"

"मुझे मर जाने दो। मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं इस समय कुछ और सोच ही नहीं सकता।"

"नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इसका हरजाना जरूर भरूॅगी क्योंकि वह चिड़िया मेरी थी।"

---

[36] Crown was the currency there.

उस नौजवान ने एक लम्बी लिस्ट बनायी और सबको जोड़ कर उसको बताया कि उसका वह सब सामान छह हजार क्राउन का रहा होगा।

राजकुमारी ने उसको वे पैसे दिये और उससे भी पूछा कि वह चिड़िया किधर गयी थी। उसने भी एक तरफ को इशारा कर के कहा कि वह चिड़िया उधर सीधी चली गयी थी।

राजकुमारी उसी दिशा में चल दी। उस नौजवान ने उन छह हजार क्राउन में से तीन हजार अपने मालिक को दिये और तीन हजार अपने पास रख लिये। इस पैसे से उसने अपनी एक नयी दूकान खोल ली।

कुछ दूर चलने के बाद राजकुमारी एक पेड़ के पास आयी जिस पर बहुत सारी चिड़ियें बैठी हुई थीं और सब की सब चिड़ियें बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचा रही थी। उन्हीं चिड़ियों में उसको अपना पति दिखायी दे गया।

वह बोली — "प्रिय, मेरे साथ घर चलो।"

पर वह चिड़िया तो हिली भी नहीं। राजकुमारी बेचारी पेड़ पर चढ़ गयी और रो रो कर उससे प्रार्थना करने लगी कि वह घर वापस चले।

उसका रोना और प्रार्थना तो ऐसी थी कि पत्थर भी पिघल जाये। वहॉ और चिड़ियें भी जो बैठी हुई थीं वे भी उसका रोना सुन कर बहुत परेशान हो रहीं थीं।

वे उस चिड़िया से बोलीं — "जाओ न, तुम अपनी पत्नी के साथ घर जाओ। तुम उसके साथ क्यों नहीं जाना चाहते?"

पर इस सबका जवाब उस चिड़िया ने ऐसे दिया कि उसने अपनी चोंच से उस राजकुमारी की एक ऑख निकाल ली। पर उसकी पत्नी फिर भी उससे घर चलने की प्रार्थना करती रही और अपनी दूसरी ऑख से रोती रही।

अब उस चिड़िया ने उसकी दूसरी ऑख भी निकाल ली। राजकुमारी रो कर बोली — "अब तो मैं अन्धी हो गयी हूॅ। मेहरबानी कर के प्रिय मुझे रास्ता दिखाओ।"

इसके बाद वह चिड़िया दो बार नीचे आयी और उसके दोनों हाथ काट कर अपने माता पिता के महल की छत पर उड़ कर चली गयी। वहॉ जा कर वह एक आदमी के रूप में बदल गयी। सारे महल में खुशियॉ छा गयीं।

उसकी मॉ ने उसके कान में फुसफुसाया — "तुमने अच्छा किया जो उस बुरी लड़की को मार दिया।"

इस बीच वह राजकुमारी किसी तरह से रास्ता ढूॅढती ढूॅढती यह कहते हुए घर चल दी — "अब मेरा क्या होगा। मेरे अब न तो ऑखें हैं और न ही हाथ हैं।"

रास्ते में एक छोटी सी बुढ़िया जा रही थी। उसने उससे पूछ लिया — "क्या बात है बेटी तुम ऐसे क्यों रो रही हो?" राजकुमारी ने उसको अपनी कहानी सुना दी।

वह बुढ़िया मडोना[37] थी। वह बोली — "बेटी अपने हाथ इस फव्वारे के पानी में डालो।" उसने ऐसा ही किया तो उसके हाथ फिर से बढ़ कर पहले की तरह हो गये।

बुढ़िया ने कहा — "अब इस पानी से अपना चेहरा धो लो।" उसने उस फव्वारे के पानी से अपना चेहरा धोया तो उसकी ऑखें भी वापस आ गयीं।

फिर उस बुढ़िया ने उसको एक जादुई छड़ी देते हुए कहा — "लो यह छड़ी ले लो। यह तुमको वह सब कुछ देगी जो भी तुम इससे मॉगोगी।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उस छड़ी से अपने ससुर के महल के सामने एक महल चाहा तो तुरन्त ही वहॉ एक बहुत ही सुन्दर महल खड़ा हो गया। उस महल में अन्दर और बाहर सब जगह हीरे जड़े हुए थे।

उसके कमरों में एक सुनहरी मुर्गी भी अपने बच्चों के साथ घूम रही थी। और उन कमरों की ऊॅची छतों के आस पास बहुत सारी सुनहरी चिड़ियें उड़ रही थीं।

वहॉ सुनहरी पोशाक पहने कई नौकर चाकर और चौकीदार घूम रहे थे। और वह खुद एक सिंहासन पर बैठी हुई थी जिसके ऊपर

[37] Madonna is another name of Mother Mary. Both Christians and Muslims regard her.

एक छत्र लगा हुआ था और उसके चारों तरफ मलमल के परदे पड़े हुए थे। इस तरह वह किसी को भी दिखायी नहीं दे रही थी।

जब सुबह हुई तो राजकुमार ने अपने महल के सामने एक और महल देखा। वह उसको बहुत सुन्दर लगा तो वह राजा से बोला — "पिता जी देखिये कितना सुन्दर महल है।"

वह किसी भी तरफ देखता तो उसको उधर ही सुनहरे जानवर घूमते और उड़ते हुए दिखायी देते। उसने सोचा कि ऐसे कौन से यहॉ बड़े आदमी आ गये जिन्होंने रातों रात यह महल बनवा लिया।

उसी समय राजकुमारी खड़ी हुई और उसने परदे में से अपना सिर बाहर निकाला तो राजकुमार तो उसको देखता का देखता ही रह गया।

उसको देखते ही वह बोला — "पिता जी देखिये वह कितनी सुन्दर लड़की है। मुझे उससे शादी करनी है।"

राजा बोला — "हॉ हॉ जाओ। कहने की जरूरत नहीं है कि वह कौन है। तुम क्या सोचते हो कि वह तुम्हारी तरफ देखेगी भी? तुम तो उसकी तरफ देख कर ही अपना समय बर्बाद कर रहे हो।"

लेकिन राजकुमार ने तो अपना मन बना रखा था सो उसने अपनी एक नौकरानी के हाथों सुनहरी कढ़ाई किया हुआ एक कपड़ा उसको भेज दिया। उस राजकुमारी ने उस कपड़े को लिया और उसको अपनी मुर्गी और उसके बच्चों की तरफ उछाल दिया।

नौकरानी घर वापस गयी और राजकुमार को सब बताया। तो राजा और रानी ने उससे कहा — "देखा न हमने तुमसे क्या कहा था। वह तो तुमको बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती।"

राजकुमार बोला — "पर मैं तो उसको पसन्द करता हूँ।" और अबकी बार उसने उसके लिये एक अँगूठी भेजी। वह अँगूठी उस राजकुमारी ने अपनी चिड़ियों की तरफ फेंक दी।

जो नौकरानी इन चीज़ों को ले कर उस महल में गयी थी इन चीज़ों की यह हालत देख कर दोबारा वहाँ जाने में हिचकिचा रही थी।

पर राजकुमार ने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। बहुत सोचने के बाद उसने एक ताबूत[38] बनवाया। वह उसमें अन्दर लेट गया और अपने नौकरों से कहा कि वह उस ताबूत को उसके पड़ोसी के महल में ले जायें।

वे उस ताबूत को वहाँ ले कर गये। वहाँ जा कर राजकुमारी ने उस ताबूत को खोला तो उसमें राजकुमार को देखा। वह उसके पास आयी और उसको और पास से देखने के लिये उसके ऊपर झुकी।

राजकुमार भी उठा और राजकुमारी की तरफ देखा तो उसने राजकुमारी को पहचान लिया और खुशी से बोला — "अरे तुम तो

[38] Coffin in which Christians and Muslims keep their dead bodies to bury after death. See its picture above

मेरी पत्नी हो। तुमको यहाँ देख कर मुझे कितनी खुशी हो रही है। चलो घर वापस चलो।"

राजकुमारी ने उसको बड़ी कड़ी निगाहों से देखा और बोली — "क्या तुम भूल गये कि तुमने मेरे साथ क्या क्या किया?"

"प्रिये उस समय मैं जादू के असर में था।"

"पर तुमको उस जादू के असर से निकालने के लिये ही तो मैं तुम्हारे साथ तीन शाम नाची और तुम्हारे माता पिता ने मुझे मारा।"

"अगर तुमने ऐसा न किया होता तो मैं तो फिर एक साँप ही रह जाता।"

"और जब तुम चिड़िया बन गये तब भी क्या तुम साँप ही थे? तब तुमने अपनी चोंच से मेरी दोनों आँखें निकाल लीं और मेरे हाथ घायल कर दिये।"

"अगर मैं यह सब न करता तो फिर मैं एक चिड़िया ही रह जाता।"

अब राजकुमारी ने कुछ सोचा और बोली — "इस तरह तो तुम ठीक थे। चलो हम अब पति पत्नी की तरह से रहते हैं।"

जब राजा और रानी ने पूरी कहानी सुनी तो उन्होंने राजकुमारी से माफी माँगी। उन्होंने उस राजकुमारी के पिता को भी बुला लिया और फिर एक महीने तक नाच गाना चलता रहा।

10 पिपीना सॉप[39]

शाप की यह लोक कथा भी यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें एक लड़की को एक परी का शाप लग जाता है कि वह सूरज देखते ही एक सॉप में बदल जायेगी। लेकिन फिर वह कैसे दोबारा से अपने मूल रूप में आयेगी यह इस लोक कथा में पढ़ो।

एक बार एक अमीर व्यापारी था जिसके पॉच बच्चे थे – चार बेटियॉ और एक बेटा। उसका बेटा सबसे बड़ा था। उसका नाम था बाल्डेलौन[40]।

व्यापारी की किस्मत ने पलटा खाया और वह अमीर से गरीब हो गया। अब वह केवल मॉग कर ही खा पी पाता था। उसकी यह हालत और भी खराब होने वाली थी क्योंकि उसकी पत्नी को छठा बच्चा होने वाला था।

बाल्डेलौन ने देखा कि उसका परिवार बड़ी कठिनाई से गुजर रहा है सो उसने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। उसने सबको गुड बाई कहा और फ्रांस के लिये चल दिया।

[39] Pippina the Serpent – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[40] Baldellone – the name of the son of the merchant.

वह एक पढ़ा लिखा नौजवान था सो जब वह पेरिस पहुँचा तो उसको वहाँ के शाही महल में काम मिल गया और फिर वहाँ वह कैप्टेन बन गया।

घर में पत्नी ने पति से कहा — "अब बच्चा आने को है और हमारे पास बच्चे की कोई चीज़ नहीं है। हम अपनी आखिरी चीज़ अपनी खाने की मेज बेच देते हैं ताकि हम बच्चे की कुछ चीज़ें खरीद सकें।"

उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को बुलाया जो पुरानी चीज़ें खरीदते थे और उनमें से एक को उन्होंने अपनी खाने की मेज बेच दी। इस तरह से वह व्यापारी अपने आने वाले बच्चे के लिये वह सब सामान खरीद सका जो उस बच्चे के लिये जरूरी था।

जब समय आया तो उनके घर में एक बेटी पैदा हुई जो बहुत सुन्दर थी। उसको देख कर उसके माता और पिता खुशी से रो पड़े। उनके मुँह से निकला — "ओ हमारी प्यारी बेटी, हमको बहुत दुख है कि तुम हमारे घर में इतनी गरीबी में पैदा हुई।"

उन्होंने अपनी उस बेटी का नाम पिपीना[41] रख दिया।

उनकी वह बेटी धीरे धीरे बड़ी होती गयी और जब वह पन्द्रह महीने की हो गयी तो वह अपने आप चलने लगी। जहाँ उसके माता पिता सोते थे वह वहीं भूसे में खेलती रहती थी।

[41] Pippina – the name of the youngest child daughter

एक बार जब वह वहॉ खेल रही थी तो वह अपना हाथ बढ़ा कर चिल्लायी — "मॉ मॉ, देखो तो।" उसकी मॉ ने देखा तो उसके उस हाथ में सोने के सिक्के थे।

उसकी मॉ को तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने उससे वे सिक्के लिये और अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने बच्ची की देख भाल करने के लिये एक आया बुलायी और बच्ची को उसके पास छोड़ कर वह बाजार दौड़ी गयी।

बाजार से उसने जी भर कर बहुत सारी चीज़ें खरीदीं और दोपहर तक उसने बहुत अच्छा खाना बना कर रखा। दोपहर को वे सब बहुत अच्छा खाना खाने बैठे।

उसके पिता ने पिपीना की पीठ थपथपाते हुए पूछा — "पिपीना बताओ तो तुमको ये चमकदार चीज़ें कहॉ से मिलीं?"

और उसने भूसे में एक छेद की तरफ इशारा करते हुए कहा — "यहॉ पिता जी। यहॉ तो सिक्कों से भरा एक पूरा बड़ा सा बर्तन रखा है। आपको केवल उसमें हाथ डाल कर बस उनको निकालना भर है।"

और इस तरह से वह परिवार एक बार फिर से अमीर हो गया और फिर से उसी तरीके से रहने लगा जैसे वह पहले रहता था।

जब वह बच्ची चार साल की हुई तो उसके पिता ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे लगता है कि अब हमको पिपीना के ऊपर जादू[42]

[42] Translated or the word "Charm".

करवा देना चाहिये। अब तो हमारे पास पैसा है तो हम पिपीना के ऊपर वह जादू क्यों न करवा दें?"

उन दिनों माता पिता अपने बच्चों के ऊपर जादू करवाने के लिये मौनरील[43] के आधे रास्ते तक जाते थे जहॉ चार परी बहिनें रहतीं थीं।

सो वे लोग पिपीना को एक गाड़ी में बिठा कर वहॉ ले गये और वहॉ जा कर उन चारों बहिनों को उसको दिया। उन परियों ने उनको बताया कि क्या क्या तैयार करना है और उस व्यापारी के घर रविवार को उस रस्म को पूरा करने के लिये आने के लिये तैयार हो गयीं।

रविवार को ठीक समय पर चारों बहिनें पलेरमो[44] आयीं। वहॉ उनके लिये जैसा उन्होंने कहा था वह सब कुछ तैयार था। उन्होंने अपने हाथ धोये, मजोरकन के आटे की चार पाई[45] बनायीं और उनको बेक करने के लिये भेज दिया।

कुछ ही देर में बेक करने वाले की पत्नी को उन पाई की खुशबू आयी तो वह अपने आपको बिल्कुल भी नहीं रोक पायी और उसने उसमें से एक पाई निकाल कर खा ली।

---

[43] Monreale – name of a place in Italy

[44] Palermo city is on Sicily Island of Italy.

[45] Pie is a kind of filled white flour Roti with any kind of thing – fruit, vegetable, meat etc. See the picture.

फिर उसने उसके जैसी एक दूसरी पाई बनायी। पर उसका आटा साधारण वाला आटा था और उसने उसको बनाने के लिये पानी वहॉ से लिया था जहॉ वह अपने ओवन साफ करने की झाड़ू धोती थी।

पर शक्ल में वह बिल्कुल दूसरी पाईयों जैसी ही थी और कोई उसको दूसरी तीन पाईयों से अलग नहीं कर सकता था।

जब वे चारों पाई उस व्यापारी के घर आयीं तो पहली परी ने यह कहते हुए एक पाई काटी — "मैं तुम पर यह जादू करती हूॅ ओ प्यारी बेटी कि तुम जब भी अपने बालों में कंघी करो तो उनमें से मोती और दूसरे जवाहरात गिरें।"

दूसरी परी ने दूसरी पाई काटी और कहा — "मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूॅ कि तुम जितनी सुन्दर अब हो दिनों दिन उससे भी ज़्यादा सुन्दर होती जाओ।"

अब तीसरी परी उठी और तीसरी पाई काटते हुए बोली — "मैं तुम्हारे ऊपर यह जादू करती हूॅ कि वह हर बेमौसमी फल जिसकी तुम इच्छा करो वह तुमको तुरन्त ही मिल जाये।"

चौथी परी ओवन की बची हुई चीज़ें भरी हुई चौथी पाई काटते हुए अपना जादू उसके ऊपर बोलने ही वाली थी कि उस पाई का एक टुकड़ा उसमें से निकल कर उसकी ऑख में जा पड़ा।

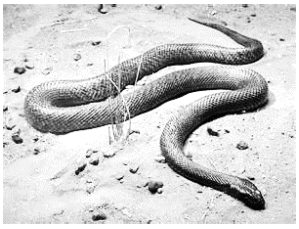

परी बोली — "ओह यह तो मेरी ऑख में लग गया। अब मैं तुम्हारे ऊपर यह बहुत बुरा जादू करती हूँ कि जब भी तुम सूरज को देखो तो उसको देखते ही तुम काला सॉप बन जाओ।"

यह सब जादू कर के वे चारों परियॉ वहीं गायब हो गयीं।

उस चौथी परी का जादू सुन कर पिपीना के माता पिता तो फूट फूट कर रो पड़े। उनकी प्यारी बेटी अब सूरज कभी नहीं देख पायेगी।

तो अभी हम पिपीना और उसके माता पिता को यहीं छोड़ते हैं और बाल्डेलौन की तरफ चलते हैं जो फ्रांस में अपने पिता की अमीरी की शान बघार रहा था। पर यह बात तो केवल वही जानता था कि उसका पिता कितना गरीब था।

वह अक्सर उनके बारे में बड़ी बड़ी बात करता रहता था और अपनी उन डींगों से उसने अपने आस पास के सब लोगों को प्रभावित कर रखा था – जैसी कि कहावत है – जो भी विदेश जाता है वह अपने आपको या तो काउन्ट कहता है या फिर ड्यूक कहता है और या फिर लौर्ड कहता है।[46]

फ्रांस का राजा यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि बाल्डेलौन के कहने में कितनी सच्चाई थी। सो उसने अपना एक

[46] Count, Duke or Lord – all are the titles for respectable people in European society, such as Prince William, the grandson of the Queen Elizabeth, has been given the title of Duke of Cambridge.

स्क्वायर[47] पलेरमो भेजा और उसको बता दिया कि उसको वहॉ जा कर क्या करना है और क्या देखना है। फिर आ कर वह उसको बताये कि उसने क्या देखा।

वह आदमी पलेरमो गया और बाल्डेलौन के पिता के बारे में पूछा। लोगों ने उसको एक बहुत सुन्दर महल की तरफ भेज दिया। उस महल में तो उसने बहुत सारे चौकीदार देखे।

वह उस महल के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उस महल की दीवारें तो सोने की हैं और अन्दर बहुत सारे नौकर चाकर घूम रहे हैं।

व्यापारी ने उस आदमी का शाही तरीके से स्वागत किया और उसको खाने की मेज पर बुलाया। जब सूरज डूब गया तो वह पिपीना को भी ले आया।

उस स्क्वायर ने जब पिपीना को देखा तो वह तो उसकी सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया। उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी। वहॉ से सब बातें देख कर वह फ्रांस लौट गया और जा कर राजा को सब बताया।

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया और कहा — "बाल्डेलौन, तुम पलेरमो जाओ और अपने घर जाओ और अपनी बहिन पिपीना को मेरे पास ले कर आओ। मैं उससे शादी करना चाहता हूॅ।

[47] Squire is a title applied to a Justice of the Peace or local judge or other local dignitory of a rural district or small town. He might be a personal assistant of a rank also.

अब बाल्डेलौन को तो यह भी पता नहीं था कि उसकी इस नाम की कोई बहिन भी थी। पर वह राजा की बातों से कुछ कुछ भॉप सका कि क्या मामला हो सकता था। उसने राजा का हुक्म माना और पलेरमो चल दिया।

पेरिस[48] में बाल्डेलौन की एक लड़की दोस्त थी। वह उससे जिद करने लगी कि वह भी उसके साथ पलेरमो चलेगी।

जब बाल्डेलौन उस लड़की को साथ ले कर पलेरमो आया तो उसने देखा कि उसका परिवार तो बहुत अमीर हो चुका है। सबने मिल कर अपनी पुरानी बातें कीं।

वह अपनी नयी बहिन से मिला और अपने माता पिता को बताया कि फ्रांस का राजा उसकी उस बहिन से शादी करना चाहता था। यह सुन कर सब बहुत खुश हुए।

पर जब पेरिस से आयी लड़की ने पिपीना को देखा तो उसको उससे बहुत जलन हुई। उसको देख कर वह अब यह प्लान बनाने लगी कि उसकी जगह वह खुद रानी हो जाये।

कुछ दिनों में ही बाल्डेलौन को फ्रांस वापस लौटना था। सबने एक दूसरे को गुड बाई कहा और बाल्डेलौन फ्रांस वापस चला गया।

पेरिस पहॅुचने के लिये पहले समुद्र से हो कर जाना होता है और फिर बाद में जमीन पर से। बाल्डेलौन ने पिपीना को जहाज में बन्द

[48] Paris is the capital of France country

कर के रखा हुआ था और उसको सूरज की एक भी किरण नहीं देखने दी थी। उसकी वह लड़की दोस्त भी उस समय उसके साथ ही थी।

जब जहाज बन्दरगाह पर पहुँचता था तो बाल्डेलौन अपनी बहिन और दोस्त को एक बड़ी सी सीडान कुर्सी[49] में बिठा कर सूरज से बचा कर बाहर ले जाता था।

जैसे जैसे पैरिस पास आता जा रहा था बाल्डेलौन की दोस्त को गुस्सा आता जा रहा था क्योंकि पेरिस पहुँच कर तो पिपीना तो रानी बन जायेगी और वह केवल एक कैप्टेन की पत्नी ही रह जायेगी। इसका मतलब यह है कि उसको जो कुछ भी करना है वहाँ पहुँचने से पहले ही पहले करना है।

उसने पिपीना से कहना शुरू किया — "पिपीना, यहाँ कुछ गर्मी हो रही है हम यहाँ थोड़ा सा परदा खोल देते हैं।"

पिपीना बोली — "बहिन, इससे मुझे नुकसान पहुँचेगा। मेहरबानी कर के इसका परदा नहीं खोलना।"

कुछ देर बाद उस लड़की ने फिर कहा — "पिपीना, मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है।"

इस बार पिपीना कछ नाराजी से बोली — "नहीं, तुमको कोई गर्मी नहीं लग रही। चुप रहो।"

[49] Sedan chair is like a palanquin. See its picture above.

"पिपीना, मुझे बहुत घुटन हो रही है।"

"फिर भी तुमको मालूम है कि मैं यह परदा नहीं खोल सकती।"

"सचमुच?" और उस लड़की ने एक छोटा सा चाकू निकाल लिया और उससे उस सीडान कुर्सी के ऊपर लगी चमड़े की छत फाड़ दी।

सूरज की एक किरन अन्दर आयी और पिपीना एक काले सॉप में बदल कर सड़क पर चली गयी और राजा के बगीचे की हैज[50] में जा कर छिप गयी।

बाल्डेलौन ने जब सीडान कुर्सी खाली देखी तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा — "मेरी बेचारी प्यारी बहिन। और बेचारा मैं। मैं राजा से जा कर क्या कहूँगा जो उसकी आशा में ऑखें बिछाये बैठा है।"

उसकी दोस्त बोली — "तुम चिन्ता किस बात की कर रहे हो? राजा से कह देना कि मैं तुम्हारी बहिन हूँ और सब ठीक हो जायेगा।" आखिर बाल्डेलौन को यही करना पड़ा।

जब राजा ने इस लड़की को देखा तो अपनी नाक सिकोड़ी और बोला — "क्या यही वह सुन्दरता है जो बेजोड़ है? पर राजा का वायदा तो राजा का वायदा होता है सो मुझे इससे शादी तो करनी ही पड़ेगी।"

---

[50] Hedge is the special wall of short dense plants which are planted to protect the house from others' sight, dust and other small animals. See the picture.

राजा ने उससे शादी कर ली और वे दोनों साथ साथ रहने लगे।

उधर बाल्डेलौन बहुत परेशान था। एक तो उसको अपनी बहिन की कमी बहुत खल रही थी और दूसरे उसे धोखा देने वाली ने राजा से शादी करने के लिये उसको छोड़ दिया था।

नयी रानी यह अच्छी तरह जानती थी कि बाल्डेलौन उसको इन दोनों बातों के लिये छोड़ेगा नहीं। इसलिये वह अब ऐसा कुछ सोचने लगी जिससे वह इस बाल्डेलौन को अपने रास्ते से हटा सके।

एक दिन उसने राजा से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उसको अंजीर खाने की इच्छा हो रही है। उस समय अंजीर का मौसम नहीं था सो राजा बोला — "तुम्हें साल के इस समय में अंजीर कहॉ मिलेंगी?"

"मुझे तो अंजीर चाहिये। बाल्डेलौन को बोलो वह ला कर देगा।"

राजा ने बाल्डेलौन को बुलाया — "बाल्डेलौन"

"जी योर मैजेस्टी।"

"रानी के लिये थोड़ी सी अंजीर ले कर आओ।"

"अंजीर और इस समय योर मैजेस्टी?"

राजा बोला — "चाहे उसका मौसम हो या न हो मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब मैंने तुमसे अंजीर लाने के

लिये कहा है तो मुझे अंजीर चाहिये नहीं तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

दुखी और ऑखें नीची किये बाल्डेलौन वहॉ से राजा के बागीचे में चला गया और वहॉ जा कर रोने लगा।

लो, वहॉ तो एक फूलों की क्यारी में से निकल कर एक काला सॉप उसके पास आ गया। उसने उससे पूछा — "क्या बात है क्यों रोते हो भैया?"

यह सुनते ही बाल्डेलौन बोला — "बहिन। अब मैं भी बहुत मुश्किल में पड़ गया हूॅ।" और उसने उसको राजा के हुक्म के बारे में बताया।

"ओह यह तो कोई सोचने की बात ही नहीं। मेरे पास एक खास ताकत है जिससे मैं बेमौसमी फल ला सकती हूॅ। तुमने कहा

कि तुमको अंजीर चाहिये। ठीक है।" और देखते ही देखते वहॉ अंजीर की एक सुन्दर सी टोकरी प्रगट हो गयी।

बाल्डेलौन उस टोकरी को ले कर तुरन्त ही राजा के पास दौड़ा गया। रानी ने वे सब अंजीर खा लीं। और उसके लिये यह बड़े शरम की बात थी कि उसने बाल्डेलौन को जहर नहीं दे दिया।

तीन दिन बाद रानी को खूबानी[51] खाने की इच्छा हुई तो उसने फिर बाल्डेलौन को बोला कि वह उसको खूबानी ला कर दे। बाल्डेलौन ने उसे फिर से बेमौसम की खूबानी ला कर दीं।

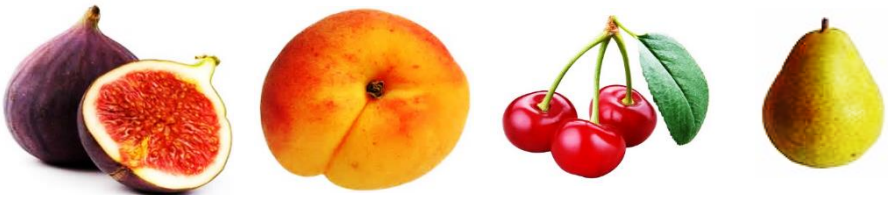

रानी की अगली इच्छा चैरी खाने की थी सो पिपीना ने अपने भाई को चैरी ला कर भी दे दीं। और फिर नाशपाती भी।

पर हम यह तो तुम लोगों को बताना भूल ही गये कि उस पिपीना के पास परियों का जादू केवल अंजीर, खूबानी और चैरी के लिये ही था नाशपाती के लिये नहीं। इसलिये वह उसको नाशपाती नहीं दे सकी।

बस अब क्या था जब बाल्डेलौन नाशपाती नहीं ला सका तो उसको मौत की सजा हो गयी। मरने से पहले जब बाल्डेलौन की आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने एक ही इच्छा प्रगट की कि उसकी लाश शाही बागीचे में दफना दी जाये।

राजा बोला "ठीक है।"

बाल्डेलौन फॉसी पर लटका कर मार दिया गया और उसकी आखिरी इच्छा के अनुसार उसके शरीर को शाही बागीचे में दफ़ना दिया गया। रानी ने चैन की सॉस ली।

[51] Fig, Apricot, Cherry and Pear. See their pictures above in this sequence.

एक रात शाही माली की पत्नी की ऑख खुली तो उसने शाही बागीचे से आती यह आवाज सुनी –

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ ॲधेरे में दबे हो
जबकि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

यह सुन कर पत्नी ने पति को जगाया तो वे दोनों दबे पॉव उठ कर बागीचे में गये तो उन्होंने देखा कि एक काला साया कैप्टेन की कब्र से खिसक कर दूर जा रहा था।

सुबह को जब रोज की तरह वह माली राजा के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाने के लिये बागीचे में जा रहा था तो उसने देखा कि फूलों की क्यारियों में तो मोती और जवाहरात बिखरे पड़े हैं।

उसने वे मोती और जवाहरात उठा लिये और उनको राजा के पास ले गया तो राजा उनको देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

अगली रात माली ने अपनी बन्दूक उठायी और उसको ले कर पहरा देने लगा। आधी रात को एक साया फिर कैप्टेन की कब्र के पास मॅडराने लगा और गाने लगा —

बाल्डेलौन ओ बाल्डेलौन तुम यहॉ ॲधेरे में दबे हो
जबकि तुम्हारी किस्मत लिखने वाली मेरे साथी के साथ रानी की तरह से खेल रही है

माली ने अपनी बन्दूक सीधी की और निशाना साध कर उसको चलाने ही वाला था कि उस साये ने कहा — "अपनी बन्दूक नीचे

रख दो। मैं भी तुम्हारी तरह से बैपटाइज़्ड और कनफर्म्ड[52] हुई हूँ। मेरे पास आओ और ज़रा मुझे ध्यान से देखो।"

कहते हुए उस साये ने अपने चेहरे पर से परदा हटा दिया। माली ने देखा वह तो एक बेमिसाल सुन्दर लड़की थी।

फिर उस लड़की ने अपने बाल खोल दिये और उसके एक बाल से बहुत सारे मोती और जवाहरात गिर पड़े।

वह लड़की फिर बोली "यह सब जो अभी तुमने यहाँ देखा है जा कर राजा से कहना और साथ में यह भी कहना कि मैं उससे कल रात यहीं मिलूँगी।" यह कह कर वह साँप बन गयी और वहाँ से चली गयी।

अगली रात उस लड़की ने मुश्किल से बस यही कहा होगा –

बाल्डेलौन ओ मेरे प्यारे भाई....

कि राजा उसके पास आ गया। उस लड़की ने अपने चेहरे से परदा उठाया और आश्चर्य में पड़े उस राजा को अपनी आश्चर्यजनक कहानी सुनायी।

राजा ने पूछा — "तुम मुझे बताओ कि इस शाप से मैं तुमको छुटकारा कैसे दिलाऊँ?"

[52] Baptization and Confirmation are the Christian rites after birth to make the child join Christian society, as Hindu have Upanayan (Janeoo) Sanskaar

"तुम इसके लिये यह करो कि कल सुबह तुम एक हवा की तरह तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लो और उस पर सवार हो कर जोरडन नदी[53] जाओ। वहॉ उसके किनारे पर उतर जाना।

वहॉ तुमको चार परियॉ नहाती हुई मिलेंगी। उनमें से एक परी ने अपने बालों में हरा रिबन लगाया होगा, दूसरी ने लाल, तीसरी ने नीला और चौथी परी ने सफेद।

तुम उस नदी के किनारे रखे उनके कपड़े उठा लेना। वे तुमसे अपने कपड़े मॉगेंगी पर तुम उनको उनके कपड़े मत देना।

इस पर पहली परी तुम्हारे ऊपर अपना हरा रिबन फेंकेगी, दूसरी परी अपना लाल रिबन फेंकेगी, तीसरी अपना नीला रिबन फैंकेगी और चौथी परी अपना सफेद रिबन फेंकेगी।

जब चौथी परी अपना सफेद रिबन और कुछ बाल तुम्हारे ऊपर फेंके तभी तुम उनके कपड़े वापस करना। वे बाल तुम यहॉ ले आना और उनसे मुझे सहला देना। तभी मेरे ऊपर पड़ा हुआ यह जादू टूट पायेगा।"

राजा को इससे ज़्यादा सुनने की जरूरत नहीं थी। बस अगली सुबह उसने अपना सबसे तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर अपना राज्य छोड़ कर जोरडन नदी की तरफ चल दिया।

[53] Jordan River

काफी चलने के बाद, तीस दिन और तीस रात, वह जोरडन नदी के किनारे पर आया। वहॉ उसको परियॉ नहाती मिल गयीं। फिर उसने वही किया जो बाल्डेलौन की बहिन ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने नहाती हुई परियों के कपड़े उठा लिये। जब परियों ने अपने कपड़े मॉगे तो राजा ने उनके कपड़े नहीं दिये। इस पर उन परियों ने अपने अपने रिबन राजा पर फेंकने शुरू कर दिये।

जब उस चौथी परी ने उसके ऊपर अपना सफेद रिबन और कुछ बाल फेंक दिये तब वह बोला — "अभी तो मैं तुमको छोड़ कर जा रहा हूॅ पर विश्वास रखो कि मैं तुम्हें इसकी कीमत जरूर चुकाऊॅगा।"

अपने राज्य में आ कर वह अपने बागीचे की तरफ दौड़ा और उस सॉप को आवाज लगायी। उसके आने पर उसने सॉप को उन बालों से सहलाया।

उन बालों को छूते ही पिपीना फिर से दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की बन गयी। उसने वे बाल अपने बालों में लगा लिये और उसके बाद उसको फिर किसी का डर नहीं रहा।

राजा ने माली को बुलाया और उससे कहा — "अब तुम एक काम करो कि एक बड़ा सा पानी का जहाज़ लो और बाल्डेलौन की बहिन को रात में ही उसमें बिठा कर कहीं पास में ही चले जाओ।

फिर कुछ दिन बाद उस जहाज़ के ऊपर किसी दूसरे देश का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर आ जाना। बाकी मैं सँभाल लूँगा।"

माली ने राजा का प्लान जैसा उसने उसको बताया था वैसे ही किया। तीन दिन बाद वह अपने जहाज़ पर अंग्रेजों का झंडा लगा कर बन्दरगाह पर ले आया।

राजा अपने महल से समुद्र देख सकता था सो जब उसने देखा कि एक विदेशी जहाज़ उसके बन्दरगाह पर आ कर लगा है तो उसने अपनी रानी से कहा — "यह कौन सा जहाज़ है? ज़रा देखो तो। लगता है कि मेरा कोई रिश्तेदार आया है। चलो उससे चल कर मिलते हैं।"

उसकी रानी जो हमेशा अपने आपको दिखाने के लिये तैयार रहती थी पलक झपकते ही जाने के लिये तैयार हो गयी। वहाँ जा कर वह उस जहाज पर गयी तो वहाँ तो उसने पिपीना को पाया।

उसने सोचा "जहाँ तक मुझे याद पड़ता है बाल्डेलौन की बहिन तो काला साँप बन गयी थी फिर यह यहाँ कहाँ से आ गयी। मुझे लगता है कि यह तो वही है"

यही सोचते हुए वे दोनों उस नये आने वाले के साथ उसकी सुन्दरता की तारीफ करते हुए जहाज़ से नीचे आ गये।

राजा ने रानी से कहा — "ऐसी लड़की को जो कोई नुकसान पहुँचाये बताओ उसको क्या सजा देनी चाहिये?"

रानी बोली — "पर ऐसा कौन नीच हो सकता है जो ऐसी लड़की को नुकसान पहुँचायेगा?"

"सोचो कि अगर कोई है भी, तो उसको क्या सजा मिलनी चाहिये?"

रानी बोली — "उसको तो इस खिड़की से नीचे फेंक देना चहिये और फिर ज़िन्दा जला देना चाहिये।"

राजा तुरन्त बोला — "तुमने ठीक कहा। यही हम उसके साथ करने जा रहे हैं। यह लड़की बाल्डेलौन की बहिन है जिससे मैं शादी करने वाला था। और तुम इससे जलती थीं।

तुम इसके साथ आयीं और तुमने इसको सॉप बनने पर मजबूर किया ताकि तुम इसकी जगह ले सको। अब तुम्हें मुझे धोखा देने का मजा चखना पड़ेगा। अच्छा हुआ कि तुमने अपनी सजा अपने आप ही सुना दी।"

फिर उसने अपने चौकीदारों को बुलाया और उनसे उसको खिड़की से बाहर फेंकने और फिर ज़िन्दा जलाने को कहा। जैसे ही राजा ने यह कहा चौकीदारों ने वह तुरन्त ही कर दिया।

उस झूठी को तुरन्त ही खिड़की को नीचे फेंक कर उसको महल के पास ही ज़िन्दा जला दिया गया। राजा ने बेकुसूर बाल्डेलौन को फॉसी की सजा देने के लिये उसकी बहिन से माफी मॉगी।

पिपीना बोली — "जो हो गया सो हो गया उसे भूल जाओ। अब देखना यह है कि हम बागीचे में क्या कर सकते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में गये और बाल्डेलौन की कब्र का पत्थर उठाया। कब्र में बाल्डेलौन का शरीर अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था।

पिपीना ने एक छोटे से ब्रश से थोड़ा सा मरहम अपने भाई की गरदन पर लगा दिया। मरहम के लगते ही वह फिर से सॉस लेने लगा। फिर वह हिलने लगा और फिर उसने अपनी ऑखें मलनी शुरू की जैसे वह किसी लम्बी नींद से जाग रहा हो। और फिर वह खड़ा हो गया।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और राजा ने महल में खुशियॉ मनाने का हुक्म दिया। उन दोनों के माता पिता को भी बुला लिया गया। बड़े धूमधाम से पिपीना और राजा की शादी हो गयी।

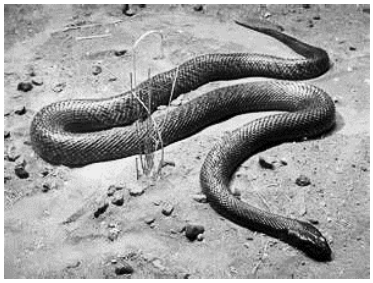

11 लम्बी पूँछ वाला चूहा[54]

शाप की इस लोक कथा में एक राजकुमार को चूहा बनने का शाप मिलता है और वह राजकुमार के रूप में तभी आ सकता है जब कोई लड़की उससे... ।

एक बार एक राजा था जिसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। जब वह शादी के लायक हुई तो बहुत सारे राजा और राजकुमारों ने उससे शादी करने की इच्छा प्रगट की।

पर उसके पिता ने उसको किसी को भी देने से मना कर दिया क्योंकि हर रात वह एक आवाज सुन कर जाग जाता था — "तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना, तुम अपनी बेटी की शादी किसी से मत करना।" और वह अपनी बेटी की शादी करने से रुक जाता।

वह बेचारी लड़की रोज शीशे में अपने आपको देखती और पूछती — "मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं तो इतनी सुन्दर हूँ।" वह यह सवाल रोज पूछती पर उसको अपने इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिलता और वह इस बारे में सोचती ही रह जाती।

एक दिन जब वे सब शाम का खाना खा रहे थे तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी मैं शादी क्यों नहीं कर सकती मैं इतनी

[54] The Mouse With the Long Tail – a folktale from Italy from its Province of Caltanissetta. Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". 1980.

सुन्दर तो हूँ। इसलिये अब आप मेरी बात सुनिये, मैं आपको दो दिन का समय देती हूँ। अगर आप दो दिन के अन्दर अन्दर किसी ऐसे आदमी को नहीं ढूँढ पाते जिससे आप मेरी शादी कर सकें तो मैं अपनी जान दे दूँगी।"

राजा बोला — "बेटी, ऐसा नहीं कहते। पर अगर तुम ऐसा कह रही हो तो तुम एक काम करो कि तुम अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनो और खिड़की पर खड़ी हो जाओ। फिर जो भी सबसे पहला आदमी या जानवर सड़क से गुजरेगा वही तुम्हारा पति होगा। बस।"

सो अगले दिन उस लड़की ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और जा कर खिड़की पर खड़ी हो गयी।

अब ज़रा सोचो कि सबसे पहले सड़क पर से कौन गुजरा? एक छोटा सा चूहा जिसकी एक मील लम्बी पूँछ थी और जिसकी बू ऊपर आसमान तक पहुँच रही थी।

चूहा रुका और ऊपर खिड़की में खड़ी राजकुमारी की तरफ देखा पर जैसे ही राजकुमारी ने चूहे की तरफ देखा तो वह तो चिल्ला कर भागी — "पिता जी पिता जी। यह आपने मेरे साथ क्या किया? यह पहला जाने वाला तो एक चूहा निकला। मुझे पूरा यकीन है कि आप मेरी शादी किसी चूहे से नहीं करना चाहते।"

उसका पिता कमरे में हाथ बाँधे खड़ा था। वह बोला — "मैं यही चाहता हूँ मेरी बेटी। जो मैंने कहा है वही होगा। तुमको सड़क पर पहला आदमी या जानवर जो कोई भी गुजरेगा उसी से शादी करनी पड़ेगी। फिर चाहे वह कोई भी हो।"

तुरन्त ही उसने सब राजाओं, राजकुमारों और दरबारियों को अपनी बेटी की शादी की शानदार दावत का न्यौता भेज दिया। सारे मेहमान बड़ी शानो शौकत से दावत में आये और आ कर अपनी अपनी जगहों पर बैठ गये पर दुलहे का अभी तक कोई पता नहीं था।

तभी दरवाजे पर कुछ खुरचने की सी आवाज सुनायी पड़ी। वहाँ और कौन हो सकता था सिवाय उस चूहे के जिसकी लम्बी पूँछ दूर दूर तक महक रही थी। एक दासी ने उसके लिये दरवाजा खोला और उससे पूछा — "तुमको क्या चाहिये?"

चूहा बोला — "तुम मेरे लिये राजा से जा कर कहो कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।"

दासी ने यह रसोइये से कहा और रसोइये ने जा कर यह बात राजा से कही कि जो चूहा राजकुमारी से शादी करना चाहता है वह आया है।

राजा बोला — "उनको इज़्ज़त के साथ अन्दर ले आओ।"

चूहा तेज़ी से फर्श पर दौड़ता हुआ अन्दर घुस आया और राजकुमारी की कुर्सी की बाँह पर आ कर बैठ गया। राजकुमारी ने

अपने बराबर में एक चूहे को बैठा देख कर शर्म और नफरत से अपना मुँह दूसरी तरफ फेर लिया।

पर चूहे ने ऐसा दिखाया कि जैसे उसने कुछ देखा ही न हो। जितना राजकुमारी उससे दूर खिसकती थी चूहा उसके उतना ही पास खिसकता जाता था।

तब राजा ने वहाँ बैठे सब लोगों को अपनी कहानी सुनायी तो वहाँ बैठे सारे लोग राजा ने जो कुछ किया था उससे राजी हो गये। वे सब मुस्कुराये और बोले — "हाँ ठीक है। चूहा ही राजकुमारी का पति होना चाहिये।" और यह कह कर सब हँस पड़े और हँसते हँसते चूहे की तरफ देखने लगे।

यह देख कर वह चूहा राजा को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैजेस्टी, सुनिये। या तो आप इन लोगों से यह कह दीजिये कि ये लोग मेरा मजाक न उड़ायें नहीं तो इसका नतीजा इनको भुगतना पड़ेगा।" चूहे ने यह सब इतने गुस्से से कहा कि राजा को उसकी बात माननी ही पड़ी।

उसके बाद राजा अपनी कुर्सी पर आ कर बैठ गया और सब लोगों से कहा कि वे सब हँसना बन्द करें और उसके होने वाले दामाद[55] की ठीक से इज़्ज़त करें।

खाना आया तो चूहा तो बहुत छोटा था और वह एक हत्थे वाली कुर्सी पर बैठा था इसलिये वह मेज पर रखे खाने तक नहीं

[55] Son-in-law – daughter's husband

पहुँच सकता था। इसलिये उसके नीचे एक ऊँची सी गद्दी रखी गयी पर वह भी उसके लिये खाने तक पहुँचने के लिये काफी नहीं थी सो वह उठा और मेज के बीच में जा कर बैठ गया।

वहाँ से वह सब लोगों की तरफ देख कर बोला — "कोई ऐतराज?"

इससे पहले कि कोई और बोले राजा बोले — "नहीं नहीं। किसी को कोई ऐतराज नहीं है।"

पर घर आये हुए मेहमानों में एक स्त्री ऐसी थी जो चूहे को अपनी प्लेट में से खाते और अपनी बू वाली लम्बी पूँछ को अपने पास बैठे आदमी की प्लेट के ऊपर से ले जाते देख कर चुप नहीं रह सकी।

जब चूहे ने उस स्त्री की प्लेट में से खाना खत्म कर लिया तो वह दूसरे मेहमानों की तरफ चला तो वह बोली — "उफ कितना गन्दा। किसने इतनी गन्दी चीज़ देखी होगी। मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नही हो रहा कि मैं इतनी गन्दी चीज़ एक राजा की खाने की मेज पर देख रही हूँ।"

यह सुन कर चूहे की मूँछें हिलीं, उसने अपनी आँखें उस स्त्री की आँखों से मिलायीं और अपनी पूँछ मेज पर फटकारते हुए ऊपर नीचे कूदने लगा।

उसके इस कूदने में जिस किसी चीज़ को भी उसकी पूँछ ने छुआ वही चीज़ वहाँ से गायब हो गयी – सूप के कटोरे, फलों के

कटोरे, प्लेट, चम्मच, छुरी, कॉटे और फिर एक एक कर के मेहमान और उसके बाद मेज और महल।

बस वहॉ रह गया तो केवल एक उजड़ा हुआ मैदान और उसमें अकेली खड़ी राजकुमारी। वह चूहा खुद भी वहॉ से गायब हो चुका था।

वहॉ इतने बड़े मैदान में अपने को अकेली देख कर राजकुमारी बोली — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

उसने इन शब्दों को एक बार फिर बोला और पैदल ही चल दी। वह कहॉ जा रही थी और कहॉ जायेगी यह उसको पता ही नहीं था।

चलते चलते उसको एक साधु मिला तो उसने राजकुमारी से पूछा — "बेटी, तुम यहॉ इस उजाड़ जगह में क्या कर रही हो? भगवान तुम्हारी सहायता करे अगर तुमको यहॉ कोई शेर या जादूगरनी मिल जाये तो?"

राजकुमारी बोली — "मेहरबानी कर के ऐसी बातें मत कीजिये। मुझे तो केवल अपना चूहा चाहिये। पहले मैं उससे नफरत करती थी पर अब मुझे वह चाहिये।"

साधु बोला — "बेटी, मुझे नहीं मालूम कि मैं तुमसे क्या कहूँ पर तुम चलती रहो जब तक तुमको मुझसे कोई ज़्यादा बूढ़ा साधु न मिल जाये। शायद वह तुमको कोई सलाह दे पाये।"

सो राजकुमारी चलती रही और चलती रही और बस यही कहती रही — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

चलते चलते उसको एक और साधु मिला। उसने उस साधु से भी वही कहा तो वह साधु बोला — "तुम जमीन में एक गड्ढा खोदो और उसमें बैठ जाओ तब देखो कि क्या होता है।"

अब राजकुमारी के पास गड्ढा खोदने के लिये तो वहॉ कुछ था नहीं सो उस बेचारी ने अपने बालों में से एक बालों में लगाने वाली पिन निकाली और उसी से गड्ढा खोदने लगी और तब तक खोदती रही जब तक कि वह इतना बड़ा नहीं हो गया कि वह उसमें खुद बैठ सकती। जब गड्ढा खुद गया तो वह उसमें बैठ गयी।

बैठते ही वह एक अॅधेरी और बहुत बड़ी गुफा में निकल आयी। "अब पता नहीं यह गुफा मुझे कहॉ ले जायेगी।" कहते हुए वह उस गुफा में चल दी।

गुफा में बहुत सारे जाले लगे हुए थे जो उसके पैरों में लिपटे जा रहे थे। वह जितना ज़्यादा उनको हटाती थी उतना ही ज़्यादा वे उसके पैरों में लिपटते जाते थे।

उस गुफा में एक दिन चलने के बाद उसको पानी की आवाज सुनायी दी। आगे चल कर उसको एक तालाब दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी मछलियॉ थीं।

उसने अपना एक पैर उस तालाब में रखा पर वह उसमें बहुत आगे तक नहीं जा सकी क्योंकि वह तालाब बहुत गहरा था। वह अब पीछे गड्ढे के लिये भी नहीं जा सकती थी क्योंकि वह गड्ढा तो उसके गुफा में आते ही बन्द हो गया था।

उसने फिर दोहराया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

इस पर उस तालाब का पानी ऊपर उठना शुरू हो गया। वहाँ से बच निकलने की कोई जगह नहीं थी सो वह उस तालाब में कूद पड़ी। जब वह पानी में थी तो उसने देखा कि वह पानी में नहीं थी बल्कि वह तो एक बड़े से महल में खड़ी थी।

उस महल का पहला कमरा क्रिस्टल[56] का बना था। दूसरा कमरा मखमल का था। और तीसरा कमरा पूरा सितारों[57] का बना था। इस तरह वह उस महल के कमरों में घूमती रही। सब कमरों में कीमती कालीन बिछे हुए थे और सब कमरों में चमकीले लैम्प जल रहे थे।

जितनी देर वह उस महल में घूमती रही वह दोहराती ही रही — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

---

[56] Crystal

[57] Translated for the word "Sequins" – shining disk with a hole in its center to decorate clothes. See their picture above.

फिर वह एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ एक बहुत बढ़िया खाने की मेज लगी हुई थी। वह कई दिनों की भूखी थी सो वह उस मेज पर बैठ गयी और पेट भर खाना खाया। फिर वह एक सोने वाले कमरे में चली गयी। वह जैसे ही पलंग पर लेटी उसको तुरन्त ही नींद आ गयी और वह गहरी नींद सो गयी।

रात को पता नहीं कब उसने कुछ आवाज सुनी जो उसे लगा कि वह आवाज किसी चूहे की पूँछ के इधर उधर होने से हुई थी। उसने अपनी ऑख खोली पर वहॉ घुप अँधेरा होने की वजह से उसे कुछ दिखायी तो नहीं दिया पर चूहे के कमरे में इधर उधर घूमने की आवाज अभी भी आ रही थी।

फिर उसको लगा कि कोई चूहा उसके पलंग पर चढ़ा और उसकी ओढ़ने वाली चादर के अन्दर आ गया। वह उसका चेहरा सहलाने लगा था। उसके मुँह से चूहे की छोटी छोटी चीं चीं की आवाज निकल रही थी।

राजकुमारी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वह कुछ बोले। बस वह चुपचाप कॉपती सी बिस्तर पर एक कोने में सुकड़ी पड़ी रही।

अगली सुबह जब वह उठी तो वह उस महल में फिर से घूमी पर वहॉ तो कोई नहीं था। उस रात को भी खाने की मेज पहली रात की तरह ही लगी हुई थी सो उसने खाना खाया और सो गयी।

एक बार फिर उसने कमरे में चूहे के भागने की आवाज सुनी। वह चूहा अबकी बार उसके चेहरे के ऊपर आ गया पर उसकी

बोलने की हिम्मत उस दिन भी नहीं हुई और उस दिन भी वह वैसे ही चुपचाप पड़ी रही।

तीसरी रात को जब उसने चूहे के घूमने की आवाज सुनी तब उसने हिम्मत कर के गाया — "अफसोस ओ मेरे चूहे, तुमसे मेरी नफरत अब तुमको पाने की इच्छा में बदल गयी है।"

तभी एक आवाज ने कहा — "लैम्प जलाओ।"

राजकुमारी ने एक मोमबत्ती जलायी तो उसने देखा कि वहॉ कोई चूहा वूहा नहीं था वहॉ तो एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

वह बोला — "मैं ही हूॅ वह बू वाला बड़ी पूॅछ वाला चूहा। मेरे ऊपर पड़े जादू से मुझको आजाद कराने के लिये मुझे एक ऐसी लड़की से मिलना जरूरी था जो मुझे प्यार करे और वह सब कुछ सहे जो तुमने सहा।"

राजकुमारी उस राजकुमार को देख कर तो बहुत खुश हो गयी। दोनों फिर वह गुफा छोड़ कर बाहर आ गये और दोनों ने शादी कर ली।

12 केंकड़ा राजकुमार[58]

एक बार एक मछियारा था जो कभी इतनी मछली नहीं पकड़ पाता था जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सकता। इसलिये वह और उसका परिवार अक्सर ही भूखा रहता था।

एक दिन जब उसने अपना जाल पानी में से खींचा तो उसको अपना जाल इतना भारी लगा कि उसको उसे खींचना मुश्किल हो गया।

पर हिम्मत कर के उसने उसे खींच ही लिया तो उसने उसमें क्या देखा कि उस जाल में एक इतने बड़े साइज़ का केंकड़ा फॅसा हुआ था जिसको एक ऑख भर कर तो वह देख ही नहीं सकता था।

"ओह आखिर आज कितना बड़ा शिकार हाथ लगा। अब मैं अपने बच्चों के लिये बहुत सारा खाना खरीद सकता हूॅ।" उसने उस केंकड़े को अपनी पीठ पर रखा और घर ले गया।

उसने अपनी पत्नी को आग जला कर उसके ऊपर एक पानी भरा बर्तन रखने को कहा क्योंकि वह जल्दी ही बच्चों के लिये खाना ले कर लौटने वाला था और वह खुद उस केंकड़े को ले कर राजा के महल चल दिया।

---

[58] The Crab Prince – a folktale from Italy from its Venice area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

वहॉ जा कर वह राजा से बोला — "हुजूर मैं आपसे इसलिये मिलने आया हूँ कि आप मुझसे यह केंकड़ा खरीद लीजिये। मेरी पत्नी ने बर्तन आग पर रख दिया है पर मेरे पास पैसे नहीं हैं जिससे मैं अपने बच्चों के लिये खाना खरीद सकूँ।"

राजा बोला — "पर मैं केंकड़े का क्या करूँगा? क्या तुम उसको किसी और को नहीं बेच सकते?"

तभी राजा की बेटी वहॉ आ गयी और उस केंकड़े को देख कर बोली — "अरे कितना अच्छा केंकड़ा है। पिता जी इसे आप मेरे लिये खरीद दीजिये न। हम इसको अपने मछली वाले तालाब में सुनहरी मछलियों के साथ रख देंगे।"

राजा की बेटी को मछलियॉ बहुत अच्छी लगती थीं। वह उस तालाब के किनारे बैठी बैठी घंटों घंटों उन मछलियों को देखती रहती थी जो उसमें तैरती रहती थीं।

उसका पिता अपनी बेटी की किसी बात को ना नहीं कर पाता था सो उसने उसके लिये वह केंकड़ा खरीद दिया। उस मछियारे ने उसे राजा के मछली के तालाब में डाल दिया।

राजा ने उसको सोने के सिक्कों से भरा एक बटुआ दे दिया जिससे वह अपने बच्चों को एक महीने तक खाना खिला सकता था। केंकड़ा वहीं छोड़ कर वह मछियारा वहॉ से चला गया।

अब राजकुमारी सारा समय वहीं उस मछली वाले तालाब के किनारे ही बैठी रहती और उस केंकड़े को ही देखती रहती। उस केंकड़े को देखते देखते वह थकती ही नहीं थी।

इतनी ज़्यादा देर तक वहॉ बैठे रहने से और उस केंकड़े को बराबर देखते रहने से अब वह उसको और उसके तरीकों को बहुत अच्छी तरह से जान गयी थी। उसने देखा कि वह केंकड़ा दिन के बारह बजे से लेकर दिन के तीन बजे तक गायब हो जाता था, भगवान जाने कहॉ।

एक दिन राजा की बेटी वहॉ उस केंकड़े को देखने के लिये बैठी हुई थी कि उसने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी।

उसने अपने छज्जे से नीचे देखा तो एक खानाबदोश वहॉ भीख मॉगने के लिये खड़ा हुआ था। राजा की बेटी ने पैसों का एक थैला उसकी तरफ फेंक दिया पर वह वह थैला न लपक सका और वह उसके बराबर से हो कर एक गड्ढे में जा पड़ा।

वह खानाबदोश उस थैले के पीछे पीछे उस गड्ढे तक गया। गड्ढे में पानी था सो वह पानी में कूद पड़ा और तैरना शुरू कर दिया।

वह गड्ढा जमीन के नीचे नीचे एक नहर से राजा के मछली वाले तालाब से जुड़ा हुआ था और वह नहर भी न जाने कहॉ तक जाती थी।

वह आदमी उस मछली वाले तालाब तक पहुँच कर उस नहर में निकल गया और एक बहुत बड़े जमीन के नीचे बने कमरे के बीच में बने एक बहुत छोटे से बेसिन[59] में निकल आया।

उस कमरे में बहुत बढ़िया परदे लटक रहे थे और एक बहुत ही सुन्दर मेज लगी रखी थी। वह आदमी उस बेसिन में से बाहर निकला और एक परदे के पीछे छिप गया।

जब दोपहर के बारह बजे तो उस बेसिन में से एक परी बाहर निकली जो एक केंकड़े के ऊपर बैठी हुई थी। उसने और केंकड़े दोनों ने मिल कर बेसिन का पानी बाहर कमरे में उलीच दिया।

फिर परी ने अपनी जादू की छड़ी से केंकड़े को छुआ तो केंकड़े के खोल से एक बहुत सुन्दर नौजवान निकल आया। वह नौजवान मेज के पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

परी ने फिर अपनी जादू की छड़ी मेज पर मारी तो वहाँ स्वादिष्ट खाना आ गया और बोतलों में शराब आ गयी। जब नौजवान ने अपना खाना पीना खत्म कर लिया तो वह फिर अपने केंकड़े वाले खोल में घुस गया।

परी ने केंकड़े के उस खोल को फिर से छुआ तो वह केंकड़ा उस परी को ले कर फिर से बेसिन में कूद गया और उसको ले कर पानी में गायब हो गया।

[59] Basin is a natural or artificial hollow place containing water.

अब वह आदमी परदे के पीछे से निकल आया और बेसिन के पानी में कूद कर फिर से राजा के मछली वाले तालाब में आ गया।

राजा की बेटी अभी भी वहीं बैठी अपनी मछलियों को तैरता देख रही थी। उस आदमी को उस तालाब में से निकलते देख कर उसने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "राजकुमारी जी मैं आपको एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूँ।" फिर वह उस तालाब में से बाहर निकल आया और उसको वह सब कुछ बताया जो वह अभी अभी देख कर आ रहा था।

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो अब मेरी समझ में आया कि यह केंकड़ा बारह से तीन बजे के बीच में कहाँ जाता है। ठीक है कल दोपहर को हम दोनों एक साथ वहाँ जायेंगे और देखेंगे।"

सो अगले दिन वे दोनों उस तालाब के पानी में तैर कर उस जमीन के नीचे बनी नहर में तैरे और उस कमरे में बने बेसिन में आ निकले। बेसिन में से निकल कर वे एक परदे के पीछे छिप गये।

दोपहर के ठीक बारह बजे उस बेसिन में से वह परी एक केंकड़े के ऊपर बैठी बाहर निकली। उसने अपनी जादू की छड़ी उस केंकड़े के खोल को छुआयी तो उसमें से एक सुन्दर नौजवान बाहर निकल आया और मेज के पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

राजकुमारी को वह केंकड़ा तो पहले से ही अच्छा लगता था पर अब वह उसमें से निकले सुन्दर नौजवान को देख कर उसके प्रेम में पड़ गयी।

अपने पास ही पड़ा केंकड़े का खाली खोल देख कर वह उस खोल के अन्दर छिप गयी। जब वह नौजवान अपना खाना पीना खत्म कर के अपने खोल में वापस आया तो वहॉ एक सुन्दर लड़की को पा कर उसने उससे फुसफुसा कर पूछा — "यह तुमने क्या किया, अगर कहीं परी ने देख लिया तो वह हम दोनों को मार देगी।"

राजा की बेटी ने भी फुसफुसा कर जवाब दिया — "पर मैं तुम को इस जादू से छुड़ाना चाहती हूॅ। बस मुझे यह बता दो कि इसके लिये मुझे करना क्या है।"

नौजवान बोला — "यह नामुमकिन है। मुझे इस जादू से वही लड़की बचा सकती है जो मुझे इतना प्यार करती हो जो मेरे साथ मरने के लिये तैयार हो।"

राजा की बेटी बेहिचक बोली — "मैं वह लड़की हूॅ। मैं तुमसे प्यार करती हूॅ और तुम्हारे लिये मरने के लिये तैयार हूॅ।"

जब उस केंकड़े के खोल के अन्दर उन दोनों में ये सब बातें चल रहीं थी तब वह परी उस केंकड़े के खोल पर बैठी और उस नौजवान ने रोज की तरह केंकड़े के पंजे बनाये और उस परी को ले

कर वहॉ से जमीन के अन्दर वाली नहर से हो कर खुले समुद्र में ले गया।

उस परी को ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि उस खोल के अन्दर राजा की बेटी भी छिपी हुई थी।

जब वह परी को उसकी जगह छोड़ कर वापस उस मछलियों वाले तालाब में आ रहा था तो उस नौजवान ने जो एक राजकुमार था राजा की बेटी को जो अभी भी उस केंकड़े के खोल में उसके साथ ही बैठी थी बताया कि वह इस जादू से कैसे आजाद हो सकता था।

उसने कहा — "तुमको समुद्र के किनारे वाली एक चट्टान पर चढ़ना पड़ेगा और वहॉ जा कर कुछ बजाना और गाना गाना पड़ेगा। परी को संगीत बहुत अच्छा लगता है तो जैसे ही वह तुम्हारा गाना सुनेगी वह गाना सुनने के लिये पानी में से बाहर निकल आयेगी।

वह तुमसे कहेगी — "और गाओ ओ सुन्दर लड़की और गाओ। तुम्हारा संगीत तो दिल खुश कर देने वाला है।"

तब तुम जवाब देना — "मैं जरूर गाऊॅगी अगर तुम अपने बालों में लगा फूल मुझको दे दो तो।"

जैसे ही तुम अपने हाथ में वह फूल ले लोगी मैं उसके जादू से आजाद हो जाऊॅगा क्योंकि वह फूल ही मेरी ज़िन्दगी है।"

इस बीच में वह केंकड़ा मछलियों वाले तालाब में पहुँच चुका था सो उसने राजा की बेटी को उस खोल में से बाहर निकाल दिया।

वह खानाबदोश अपने आप ही उस नहर में से तैर कर बाहर आ गया था। नहर में से निकल कर जब उसको राजा की बेटी कहीं दिखायी नहीं दी तो उसको लगा कि वह तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। अब वह राजा की बेटी को कहाँ ढूँढे।

फिर उसने देखा कि जल्दी ही वह लड़की मछलियों वाले तालाब में से निकल आयी। उसने उस खानाबदोश को धन्यवाद दिया और उसको बहुत सारा इनाम भी दिया।

उसके बाद वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह संगीत सीखना चाहती थी। अब क्योंकि राजा उसको किसी भी चीज़ के लिये मना नहीं कर सकता था सो उसने अपने राज्य के सबसे अच्छे संगीतज्ञों और गवैयों को बुलाया और उनको अपनी बेटी को संगीत सिखाने के लिये रख दिया।

जब उसने संगीत सीख लिया तो उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी, अब मैं समुद्र के किनारे वाली चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हूँ।"

"क्या? समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हो? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?" पर फिर हमेशा की तरह से उसको वहाँ जाने की इजाज़त भी दे दी।

पर उसने उसकी सफेद पोशाक पहने आठ दासियॉ उसके साथ कर दीं और उन सबकी सुरक्षा के लिये उन सबके पीछे कुछ दूरी से कुछ हथियारबन्द सिपाही भी भेज दिये।

राजा की बेटी ने चट्टान पर बैठ कर अपनी आठ दासियों के साथ अपनी वायलिन बजानी शुरू की।

संगीत सुन कर परी लहरों से निकल कर बाहर आयी और उस से बोली — "तुम कितना अच्छा बजाती हो ओ लड़की। बजाओ, बजाओ। तुम्हारा यह संगीत सुन कर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।"

राजा की बेटी बोली — "हॉ हॉ मैं और बजाऊॅगी अगर तुम अपने बालों में लगा यह फूल मुझे दे दो क्योंकि मुझे तुम्हारे बालों मे लगा यह फूल बहुत पसन्द है।"

परी बोली — "यह फूल तो मैं तुम्हें दे दूॅगी अगर तुम इसको वहॉ से ले सको जहॉ मैं इसको फेंकूॅ।"

उसने परी को विश्वास दिलाया — "मैं उसको वहॉ से जरूर उठा लूॅगी जहॉ भी तुम इसको फेंकोगी।" और उसने फिर अपना वायलिन बजाना और गाना शुरू कर दिया।

जब उसका गीत खत्म हो गया तब उसने परी से कहा — "अब मुझे फूल दो।"

परी बोली "यह लो।" और यह कह कर उसने वह फूल समुद्र में जितनी दूर हो सकता था फेंक दिया।

राजा की बेटी तुरन्त समुद्र में कूद गयी और उस फूल को लेने के लिये उसकी तरफ लहरों पर तैरने लगी।

उसकी आठ दासियॉ जो अभी भी चट्टान पर खड़ी थीं चिल्लायीं — "राजकुमारी को बचाओ, राजकुमारी को बचाओ।" उनके चेहरों के ऊपर पड़े सफेद परदे अभी भी हवा में हिल रहे थे।

पर राजा की बेटी तैरती रही तैरती रही। कभी वह लहरों में छिप जाती तो कभी उनके ऊपर आ जाती।

कुछ देर बाद उसको कुछ शक सा होने लगा था कि पता नहीं वह उस फूल तक कभी पहुॅच भी पायेगी या नहीं कि तभी एक बड़ी सी लहर आयी और वह फूल उसके हाथ में थमा गयी।

उसी समय उसने अपने नीचे से एक आवाज सुनी — "तुमने मेरी ज़िन्दगी मुझे वापस दी है इसलिये मैं तुमसे शादी करना चाहता हूॅ। अब तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे नीचे ही हूॅ। मैं तुमको किनारे तक पहुॅचा दूॅगा। पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं, अपने पिता को भी नहीं।

अब मैं अपने माता पिता के पास जाता हूॅ और जा कर उनको यह सब बताता हूॅ और फिर चौबीस घंटों के अन्दर अन्दर आ कर मैं तुम्हारे माता पिता से तुम्हारा हाथ मॉगता हूॅ।"

उस समय क्योंकि तैरते तैरते राजा की बेटी की सॉस फूल रही थी इसलिये वह केवल इतना ही कह सकी — "हॉ हॉ मैं समझती हूॅ।" इतने में वह केंकड़ा उसको किनारे पर ले आया।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसने राजा से केवल इतना ही कहा कि वहाँ वायलिन बजा कर उसको बहुत ही अच्छा लगा।

अगले दिन तीसरे पहर तीन बजे ढोलों की और बाजे बजने की और घोड़ों की टापों की आवाज के साथ एक मेजर महल में दाखिल हुआ और बोला कि वह राजा से मिलना चाहता था।

उसको राजा से मिलने की इजाज़त दे दी गयी और फिर राजकुमार ने राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगा। राजकुमार ने राजा को अपनी सारी कहानी भी सुनायी।

राजा उसकी कहानी सुन कर सकते में आ गया क्योंकि अभी तक तो उसको इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था।

उसने अपनी बेटी को बुलाया तो वह भागती हुई चली आयी और आ कर यह कहते हुए राजकुमार की बाँहों में गिर गयी — "यही मेरा दुलहा है पिता जी, यही मेरा दुलहा है।"

राजा ने समझ लिया कि अब वह कुछ भी नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार के साथ कर दे। और उसने उन दोनों की शादी कर दी।

List of Stories in “Curses in Folktales-1”

1. Pome and Peel
2. The Queen of The Three Golden Mountains
3. The Thieving Dove
4. The Little Shepherd
5. The Apple Girl
6. The Man Who Came Out Only at Night
7. The Prince Who Married a Frog
8. The three Dogs
9. Serpent King
10. Pippina the Serpent
11. The Mouse With the Long Tail
12. The Crab Prince

List of Stories in “Curses in Folktales-2”

1. Beauty and the Beast
2. The White Cat
3. Raven
4. The Frog Prince-1
5. The Frog Prince-2
6. Baker's Idle Son
7. The Three Golden Oranges
8. The Mouse Princess
9. The Enchanted Pig
10. East o' the Sun and the West o' the Moon

List of Stories in “Curses in Folktales-3”

1. The Calabash Child
2. The Guardian of the Pool
3. The Seven Headed Snake
4. The Hare and the Spirit
5. The Snake Chief
6. The Frog Princess
7. Fenist the Falcon
8. The Most Beautiful Princess

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022